राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, गुरुवार , 11 मार्च 2026

वर्ष 14, अंक 318, पृष्ट 04, मूल्य: 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

10 माह से मानदेय न मिलने पर फूटा मनरेगा कर्मियों का गुस्सा, ब्लॉक कार्यालय के बाहर प्रदर्शन...03

जलभराव वाले क्षेत्रों में पंपिंग स्टेशन स्थापित करने की योजना को मंजूरी...04

'सिलेंडर बुक करने पर ढाई दिन में डिलीवरी मिलेगी', गैस से शिपिंग तक 4 मंत्रालयों ने बताया ईरान संकट पर ताजा हाल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पश्चिम एशिया में ईरान और इजरायल के बीच छिड़ी जंग ने जहां पूरी दुनिया की सांसें अटका दी हैं वहीं भारत में ईंधन की किल्लत को लेकर उड़ रही अफवाहों पर सरकार ने अब तक का सबसे बड़ा अपडेट दिया है. पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने देशवासियों को बड़ी राहत देते हुए एलान किया है कि रसोई गैस की आपूर्ति को लेकर घबराने की कोई जरूरत नहीं है. अगर आप आज सिलेंडर बुक करते हैं तो महज ढाई दिन के भीतर डिलीवरी आपके घर तक सुनिश्चित की जाएगी. केंद्र सरकार ने पूर्णविराम 4 मंत्रालयों की प्रेस ब्रीफिंग में केंद्र सरकार की तरफ से ढ़ाई दिन में गैस सिलेंडर मिलने का दावा किया. पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय की ओर से स्पष्ट किया गया कि अंतरराष्ट्रीय उथल-पुथल के बावजूद हमारी सप्लाई चेन पूरी तरह सुरक्षित है।

2 तेल टैंकर जल्द भारत पहुंच रहे

सप्लाई और सुरक्षा का भरोसा मंत्रालय की वरिष्ठ अधिकारी सुजाता शर्मा ने आंकड़ों के साथ जानकारी देते हुए बताया कि भारत की दैनिक खपत लगभग 55 लाख बैरल कच्चे तेल की है. उन्होंने आश्वस्त किया कि फिलहाल सप्लाई को लेकर चिंता की कोई बात नहीं है. मंत्रालय की तरफ से कहा गया कि सरकार स्थिति पर पैनी नजर बनाए हुए है और वर्तमान में भारत के दो बड़े तेल टैंकर (शिप) समुद्र के रास्ते में हैं जो कुछ ही समय में भारतीय बंदरगाहों पर लंगर डालेंगे. यह इस बात का प्रमाण है कि वैश्विक युद्ध के बीच भी भारत का लॉजिस्टिक्स नेटवर्क मजबूती से काम कर रहा है. कीमतों और डिलीवरी का गणित घरेलू मोर्चे पर बात करें तो दिल्ली में एलपीजी सिलेंडर की कीमत अब 913 रुपये हो गई है।

क्यों बढ़ाई 60 रुपये कीमत?

मंत्रालय ने स्वीकार किया कि वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में अस्थिरता के कारण इसमें 60 रुपये की हालिया बढ़ोतरी करनी पड़ी है. हालांकि, अधिकारी ने यह भी साफ किया कि यदि सरकार समय पर हस्तक्षेप नहीं करती तो बाजार में एलपीजी के दाम इससे कहीं ज्यादा ऊंचे स्तर पर होते. डिलीवरी के संबंध में सरकार ने बड़ी राहत देते हुए कहा है कि सिलेंडर बुक करने के मात्र ढाई दिन के भीतर उपभोक्ता के घर तक गैस पहुँच जाएगी।

पैनिक मत करें

पैनिक न हों सरकार ने जनता से विशेष अपील की है कि वे घबराहट (Panic) में आकर ईंधन की बुकिंग या खरीदारी न करें. यह एक वैश्विक चुनौती जरूर है, लेकिन भारत की ऊर्जा सुरक्षा पुख्ता है. अधिकारियों ने जोर देकर कहा कि लोग अफवाहों से बचें और अनावश्यक भंडारण न करें, क्योंकि पैनिक बुकिंग से व्यवस्था पर बेवजह दबाव बढ़ता है।

राज्यों को जमाखोरी रोकने का आदेश

केंद्रीय गृह सचिव ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों (DGP) के साथ बैठक की. बैठक में राज्यों को जमाखोरी और कालाबाज़ारी रोकने के लिए सक्रिय कदम उठाने पर जोर दिया गया. इसके अलावा यह भी कहा गया कि जनता तक

सही और भरोसेमंद जानकारी पहुंचाने के लिए हर राज्य एक अधिकृत प्रवक्ता नियुक्त करे, जो नियमित रूप से अपडेट साझा करे.

पश्चिम एशिया में जारी इस युद्ध के बीच उत्तर प्रदेश, बिहार से लेकर तेलंगाना और तमिलनाडु तक लाखों लोग एलपीजी सिलेंडर की किल्लत से जूझ रहे हैं. एलपीजी सप्लाई बंद होने जयपुर स्थित बोरोसिल के कारखाने में काम बंद करना पड़ा और कंपनी प्रबंधन ने करीब तीन हजार श्रमिकों को बुधवार से काम पर नहीं आने के लिए कह दिया है. वहीं दिल्ली हाईकोर्ट की लॉयर्स कैंटीन में एलपीजी गैस सिलेंडर उपलब्ध न होने के कारण फिलहाल मुख्य भोजन (मेन कोर्स) तैयार और परोसा नहीं जा रहा है।

बिहार सहित कई राज्यों में कमर्शियल गैस सिलेंडरों की सप्लाई रोक दी गई है. वहीं पटना से लेकर अयोध्या तक कई लोग सुबह ही गैस एजेंसी के गोदाम के बाहर लाइन लगाकर खड़े हैं. कई लोगों की शिकायत है कि गैस सिलेंडर की बुकिंग करवाने के बावजूद 4-5 दिनों तक एलपीजी सिलेंडर उन्हें नहीं मिल पाई है.

रसोई गैस की सप्लाई में दिक्कत की खबरों के सरकार ने बड़ा फैसला लिया है. पूरे देश में केंद्र सरकार ने ईसीए यानी एसेंशियल कमोडिटी एक्ट लागू कर दिया है. केंद्र सरकार ने एलपीजी और सीएनजी की आपूर्ति तय करने के लिए बड़ा फैसला लिया है. सरकार के मुताबिक, आवश्यक सेवाओं को प्राथमिकता दी जाएगी और कुछ उद्योगों को सीमित गैस आपूर्ति मिलेगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने भी कैबिनेट मीटिंग में मंत्रियों को साफ निर्देश दिए कि पश्चिम एशिया में जारी संकट का असर आम आदमी पर बिल्कुल नहीं पड़ना चाहिए. प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस वैश्विक उथल-पुथल के समय जनता का भरोसा बनाए रखना सबसे ज़रूरी है. प्रधानमंत्री ने मंत्रियों से कहा कि तेल की क़ीमतें स्थिर हैं, ये बात लोगों तक पहुंचाएं और ये भी बताएं कि देश में तेल का पर्याप्त स्टॉक मौजूद है. प्रधानमंत्री ने ये भी कहा कि भारत ने सप्लाई चेन मैनेजमेंट सिस्टम इस संकट को ध्यान में रखकर तैयार किया है, इसे भी जनता तक पहुंचाया जाए।

भारत सरकार ने दावा किया है कि इस जंग का तेल की कीमतों पर कोई असर नहीं पड़ेगा और देश में घरेलू उपभोक्ता के लिए गैस की कोई कमी नहीं है. सरकार की तरफ से बताया गया कि भारत में फ़िलहाल पेट्रोल और डीज़ल के दाम स्थिर ही रहेंगे वो नहीं बढ़ेंगे. वहीं गैस क़ीमतों में हुआ 60 रुपये का इजाफा मौजूदा हालत की वजह से नहीं, बल्कि पिछले साल की अंडरकवरी की वजह से बढ़े हैं. दरअसल इजरायल और अमेरिका के खिलाफ ईरान की जंग के चलते मिडिल ईस्ट के प्रमुख ऊर्जा परिवहन मार्गों में आई बाधाओं के चलते पिछले एलपीजी सिलेंडरों की कीमतों में शनिवार को ही इजाफा किया गया था. घरेलू एलपीजी सिलेंडरों की कीमत में 60 रुपये और कमर्शियल रसोई गैस सिलेंडरों की कीमत में 115 रुपये की बढ़ोतरी की गई।

ईरान की मार से बैकफुट पर आया इजरायल, शिया मुल्क के लोगों से लगाने लगा गुहार, नेतन्याहू का क्या है इरादा?

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेरिका और इजरायल ने एकजुट होकर ईरान पर अटैक कर दिया. इस हमले में ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई मारे जा चुके हैं. सेना के कई ठिकाने तबाह हो चुके हैं, लेकिन तेहरान के पास मिसाइल्स और ड्रोन का भंडार अभी भी बाकी है. यही वजह है कि ईरान की तरफ से इजरायल और अरब देशों में स्थित अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन अटैक किया जा रहा है. ईरान के साथ ही इजरायल पर भी युद्ध का काफी असर पड़ा है. ठ?यापक पैमाने पर तबाही मची है. अमेरिका और इजरायल का अनुमान था कि खामेनेई के मारे जाने के बाद ईरान आसानी से सरेंडर कर देगा, पर इसके आसार फिलहाल नजर नहीं आ रहे हैं. दूसरी तरफ, दुनिया भर में एनर्जी संकट जैसी स्थिति पैदा हो गई है. ऐसे में इजरायल के रुख में नरमी दिखने लगी है. बेंजामिन नेतन्?याहू बैकफुट पर दिख रहे हैं. शायद यही वजह है कि इजरायल पीएम ने ईरान की जनता से खास गुहार लगाई है. उन्होंने ईरानी जनता के लिए भावुक संदेश जारी किया है।

इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ईरान की जनता को संबोधित करते हुए एक कड़ा और भावनात्मक संदेश जारी किया है. उन्होंने कहा कि मौजूदा हालात ईरान के लोगों के लिए जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर है, जिसके जरिए वे अयातुल्ला खामेनेई के शासन को

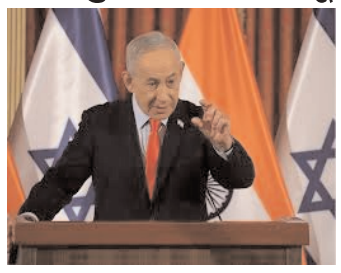

हटाकर अपनी स्वतंत्रता हासिल कर सकते हैं. नेतन्याहू का यह बयान ऐसे समय आया है जब क्षेत्र में तनाव और संघर्ष लगातार बढ़ रहा है. नेतन्याहू ने अपने संदेश में कहा कि इजरायल और अमेरिका मिलकर तेहरान के तानाशाहों के खिलाफ ऐतिहासिक लड़ाई लड़ रहे हैं. उन्होंने दावा किया कि दोनों देशों की कार्रवाई से ईरान की सत्ता से जुड़े कई ठिकानों को निशाना बनाया गया है और इस अभियान में इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) से जुड़े हजारों लड़ाके तथा कई मिसाइल लॉन्चर नष्ट किए गए हैं।

हमारा टार्गेट ईरानी शासन के ठिकाने - नेतन्याहू

इजरायली प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि उनकी सैन्य कार्रवाई का लक्ष्य केवल ईरानी शासन के ठिकाने हैं, न कि आम नागरिक. उन्होंने कहा कि इजरायल पूरी कोशिश कर रहा है कि ईरान की जनता को किसी तरह का नुकसान न पहुंचे. उनके मुताबिक, इजरायल खुद को ईरान के लोगों का सहयोगी मानता है और उनकी संस्कृति, संप्रभुता तथा विरासत का सम्मान करता है. नेतन्याहू ने अपने संबोधन में दावा किया कि अयातुल्ला और उनके सहयोगी अब भाग रहे हैं और उनके पास छिपने की कोई सुरक्षित जगह नहीं बची है. उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में ऐसी परिस्थितियां बनाई जाएंगी, जिससे ईरान की जनता अपने भविष्य का फैसला खुद कर सके।

'ईरान की जनता को जिम्मेदारी'

प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने ईरान के लोगों से आह्वान किया कि वे इस मौके के लिए तैयार रहें. उन्होंने कहा कि सही समय बहुत तेजी से नजदीक आ रहा है और जब वह समय आएगा तो आगे की जिम्मेदारी ईरान की जनता को सौंपी जाएगी. नेतन्याहू ने भरोसा जताया कि ईरान के लोगों के लंबे समय से देखे जा रहे सपने हकीकत में बदल सकते हैं. विश्लेषकों के अनुसार नेतन्याहू का यह संदेश केवल सैन्य कार्रवाई का बयान नहीं है, बल्कि ईरान के भीतर राजनीतिक बदलाव को लेकर दिया गया एक खुला संकेत भी माना जा रहा है. इससे यह भी साफ होता है कि इजरायल क्षेत्र में ईरान के प्रभाव को चुनौती देने के लिए सैन्य और राजनीतिक दोनों स्तरों पर रणनीति अपना रहा है।

तनाव बढ़ेगा या कम होगा?

हालांकि, इस बयान पर ईरान की सरकार की ओर से अभी कोई औपचारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है, लेकिन माना जा रहा है कि इससे मध्य पूर्व में पहले से चल रहे तनाव और बढ़ सकते हैं. विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले दिनों में क्षेत्रीय राजनीति और सुरक्षा स्थिति पर इस बयान का व्यापक असर देखने को मिल सकता है।

संक्षिप्त ख़बरें

भाजपा के 'अच्छे दिन' के सिलेंडर हो गए खाली'- गैस संकट पर अखिलेश का सरकार पर करारा हमला

लखनऊ- समाजवादी पार्टी (सपा) के प्रमुख अखिलेश यादव ने बुधवार को घरेलू रसोई गैस की आपूर्ति में संकट का आरोप लगाया । उन्होंने भाजपा सरकार पर एलपीजी सिलेंडरों का सुचारू वितरण सुनिश्चित करने में विफल रहने का आरोप लगाया और दावा किया कि लोगों को 'रिफिल' के लिए लंबी कतारों में खड़े होने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है लेकिन उन्हें भरे हुए सिलेंडर मिल नहीं रहे हैं। सपा प्रमुख ने 'एक्स' पोस्ट किया,''खाली हो गया भाजपा के 'अच्छे दिनों' का सिलेंडर।

उपभोक्ता के पास डिलीवरी ऑथेंटिकेशन कोड नहीं

उन्होंने लिखा,''सिलेंडर की लाइन में घंटों लगने के बाद बताया जा रहा है कि जब तक उपभोक्ता के पास डिलीवरी ऑथेंटिकेशन कोड (डीएसी) नंबर नहीं होगा तब तक गैस का सिलेंडर नहीं मिलेगा, ऐसे में जनता में रोष-आक्रोश तो जन्मेगा ही। जनता कह रही है कि अगर डीएसी के लिए गैस कंपनियों का सर्वर डाउन है तो हम क्या करें, सर्वर चलाना तो सरकार की ज़िम्मेदारी है।

सारा खेल कालाबाज़ारी करने वाले का

पुरानी पासबुक दिखाने के बहाने सिलेंडर न देना अमानवीय है क्योंकि बच्चे-बुजुर्ग घरों में भूखे हैं।'' उन्होंने कहा कि यह सारा खेल कालाबाज़ारी करनेवाले भाजपाई खेल रहे हैं तथा कालाबाजार में लोगों से उनकी मजबूरी के हिसाब से कई गुना तक दाम वसूले जा रहे हैं। यादव ने कहा कि कभी ऑक्सीजन के सिलेंडर के लिए जनता भटकी थी, अब रसोई गैस के सिलेंडर के लिए भटक रही है।

भाजपा ने भुखमरी के कगार पर लाकर अनाथ छोड़

उन्होंने कहा कि भाजपा ने परिवारवालों को भुखमरी के कगार पर लाकर अनाथ छोड़ दिया है। सपा प्रमुख ने कहा,''भाजपा सरकार फेल हो गयी है और भाजपाई नेता नदारद हैं। अब क्या जनता के लिए भाजपाइयों के घरों से भोजन आएगा या भाजपाई पंडाल-पंगत लगाकर भूखी जनता का पेट भरेंगे।

स्पीकर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर अमित शाह का विपक्ष पर हमला, बोले- चार दशक बाद हुई ऐसी घटना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में स्पीकर के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव को बेहद गंभीर और दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि लगभग चार दशक बाद ऐसी स्थिति बनी है जब लोकसभा के स्पीकर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, जो लोकतांत्रिक परंपराओं के लिहाज से ठीक संकेत नहीं है। अमित शाह ने कहा कि स्पीकर किसी एक राजनीतिक दल के नहीं होते, बल्कि पूरे सदन के प्रतिनिधि और संरक्षक होते हैं। उनका काम सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के अधिकारों की रक्षा करना होता है।

स्पीकर के चुनाव में पक्ष और विपक्ष दोनों का समर्थन

गृह मंत्री ने चर्चा के दौरान कहा कि इस मुद्दे पर सदन में करीब दस घंटे से अधिक बहस हुई और 40 से ज्यादा सांसदों ने अपनी राय रखी। उन्होंने याद दिलाया कि जब स्पीकर का चयन हुआ था, तब सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के नेताओं ने मिलकर उन्हें आसन तक पहुंचाया था। उनके मुताबिक यह इस बात का संकेत था कि

सदन के सभी दलों ने उस समय स्पीकर के प्रति भरोसा जताया था।

लोकतंत्र की सबसे बड़ी संस्था है लोकसभा

अमित शाह ने कहा कि लोकसभा देश के लोकतंत्र की सबसे बड़ी संस्था है और दुनिया में इसकी प्रतिष्ठा है। ऐसे में यदि इस संस्था के प्रमुख यानी स्पीकर की निष्ठा पर सवाल उठाए जाते हैं तो इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की छवि प्रभावित होती है। उन्होंने कहा कि संसद का संचालन भरोसे और परंपराओं के आधार पर चलता है, इसलिए इन संस्थाओं की गरिमा बनाए रखना सभी दलों की जिम्मेदारी है।

संसद कोई मेला नहीं, नियमों के तहत चलती है कार्यवाही

गृह मंत्री ने कहा कि पिछले 75 वर्षों में संसद के दोनों सदनों ने लोकतांत्रिक परंपराओं को मजबूत किया है। सदन की कार्यवाही तय नियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार चलती है। उनका कहना था कि संसद कोई ऐसा मंच नहीं है जहां कोई भी सदस्य अपनी इच्छा के अनुसार बोल सके। यहां बोलने और बहस करने के लिए निर्धारित नियमों का पालन करना जरूरी होता है।

नियमों का पालन कराना स्पीकर की जिम्मेदारी

अमित शाह ने स्पष्ट कहा कि यदि कोई सदस्य सदन के नियमों का पालन नहीं करता है, तो उसे रोकना या बाहर जाने के लिए कहना स्पीकर की जिम्मेदारी होती है। उन्होंने यह भी कहा कि ये नियम आज के नहीं बल्कि देश के शुरुआती संसदीय दौर में बने थे, जब जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री थे। गृह मंत्री के अनुसार स्पीकर के फैसले से सत्ता पक्ष या विपक्ष सहमत या असहमत हो सकते हैं, लेकिन उनके निर्णय की नीयत या निष्पक्षता पर सवाल उठाना उचित नहीं माना जा सकता।

खाकी फिर दागदार! UP Police का हेड कांस्टेबल 15 हजार रिश्वत लेते रंगेहाथ गिरफ्तार, एक केस के बदले मांगी ये मोटी रकम

सहारनपुर - उत्तर प्रदेश में सहारनपुर जिले के मण्डी थानाक्षेत्र में एक पुलिसकर्मी को बुधवार को भ्रष्टाचार निवारण संगठन ने कथित रूप से 15 हजार रुपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। संगठन ने यह जानकारी दी। उसने बताया कि मुख्य आरक्षी विनोद कुमार को लेकर भ्रष्टाचार निवारण संगठन की एक टीम सदर बाजार थाने पहुची और वहां उसने उससे पुछताछ की। शिकायतकर्ता इमरान ने पत्रकारों को बताया कि मण्डी थानाक्षेत्र में खताखेडी चौकी पर तैनात इस मुख्य आरक्षी ने उसके भाई फैजान को गाली-गलौज के एक मामले में अज्ञात के रूप में उठा लिया था और फिर उससे 20 हजार रुपये रिश्वत मांगी तथा बाद में 15 हजार रुपये पर बात तय हुई। इमरान ने बताया कि विनोद कुमार ने मामला निपटाने और राहत देने के बदले रिश्वत मांगी थी जिसकी शिकायत उसने भ्रष्टाचार निवारण टीम से की थी। उसने कहा कि शिकायत मिलने पर भ्रष्टाचार निवारण संगठन की एक टीम ने विषय की जांच की और सुनियोजित तरीके से जाल बिछाकर उसे 15 हजार रुपये देकर मुख्य आरक्षी विनोद कुमार के पास भेजा। उसने कहा कि जैसे ही विनोद ने यह रकम अपने हाथ में ली, तभी पहले से घात लगाये भ्रष्टाचार निवारण टीम ने उसे रंगे हाथ धर दबोचा। भ्रष्टाचार निवारण संगठन की टीम विनोद कुमार से थाना सदर बाजार मे पूछताछ के बाद उसे अपने साथ ले गई है।

शादी समारोह में पूर्व प्रधान पति की गोली मारकर हत्या, रंजिश में हत्या की आशंका

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बागपत - उत्तर प्रदेश में बागपत के दोघट कस्बे में एक विवाह समारोह में शामिल होने आये शामली जनपद के पूर्व प्रधान की गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने इस मामले में कारर्वाई करते हुए एक हमलावर को हिरासत में लिया है। उसके कब्जे से हत्या में प्रयुक्त हथियार भी बरामद किया है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमाटर्म के लिए भेज दिया है।

मृतक के परिजनों की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर कारर्वाई शुरू कर दी है। पुलिस अधीक्षक सूरज कुमार राय ने बताया कि मंगलवार बुधवार की मध्य रात्रि करीब डेढ़ बजे पुलिस को सूचना मिली कि कस्बा दोघट में बारात में आए पूर्व प्रधान की गोली मारकर हत्या कर दी गई। सूचना मिलते ही दोघट थाना पुलिस तथा अन्य पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे।

उन्होंने बताया कि मंगलवार की रात्रि को शामली जनपद के बहावड़ी गांव निवासी विक्की उर्फ विवेक (42) अपनी पत्नी और पूर्व प्रधान बबली के साथ बागपत के कस्बा दोघट में एक विवाह समारोह में बाराती के रूप में शामिल होने आये थे।

बताया गया कि जैसे ही वह फार्म हॉउस की पार्किंग में पहुंचे तो उसी के गांव के ही दो लोगों ने गांव की पुरानी रंजिश को लेकर उसकी गोली मारकर हत्या कर दी। फार्म हॉउस में अचानक गोली चलने से वहां अफरातफरी मच गई और लोग इधर उधर भागने लगे। फार्म हाउस के मालिक सुनील पंवार ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना पाकर दोघट पुलिस मौके पर पहुंची। वहां मौजूद लोगों ने गोली मारकर भाग रहे आरोपियों में से एक को पकड़ लिया और उसकी पिटाई कर पुलिस को सौंप दिया।

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर बागपत पोस्टमाटर्म के लिए भेज दिया। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि मृतक की पत्नी बबली ने चार लोगों के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से हत्या में प्रयुक्त तमंचा बरामद कर लिया है। पुलिस मामले की जांच कर रहीं है।

आगरा में चलती स्कूल बस की टूटी सीट से गिरी छात्रा, ऊपर चढ़ गया पहिया; मासूम की दर्दनाक मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है. एत्मादपुर थाना क्षेत्र के नगला काले में एक प्राइवेट स्कूल की जर्जर बस मासूम बच्चों के लिए काल बन गई. यहां चलती बस की टूटी हुई सीट से गिरकर 9 साल की छात्रा नैना की दर्दनाक मौत हो गई. इस हादसे ने एक बार फिर स्कूली वाहनों की फिटनेस और प्रबंधन की घोर लापरवाही को उजागर कर दिया है. घटना के समय स्कूल बस बच्चों को लेकर स्कूल जा रही थी. चश्मदीदों के अनुसार, बस की हालत बेहद खस्ता थी और जिस सीट पर छात्रा नैना बैठी थी, वह नीचे से पूरी तरह जर्जर और टूटी हुई थी. चलते-चलते अचानक नैना उस टूटी सीट के बीच से नीचे सड़क पर जा गिरी. ड्राइवर को इसका अहसास तक नहीं हुआ और बस का भारी पहिया मासूम के ऊपर से गुजर गया, जिससे वह मौके पर ही लहूलुहान होकर तड़पने लगी।

माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल

बस में मौजूद अन्य बच्चों ने जब यह भयानक मंजर देखा, तो उन्होंने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया. बच्चों का शोर सुनकर चालक ने बस रोकी. आनन-फानन में घायल छात्रा को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया. मासूम नैना की मौत की खबर मिलते ही उसके परिवार में कोहराम मच गया और माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल है।

सड़कों पर दौड़ाई जा रहीं कबाड़ बसें

इस हृदयविदारक घटना के बाद पूरे इलाके में गम और आक्रोश का माहौल है. स्थानीय लोगों और परिजनों ने स्कूल प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि बच्चों की जान जोखिम में डालकर ऐसी कबाड़ बसें सड़क पर दौड़ाई जा रही हैं. घटना के बाद से स्कूल प्रबंधन के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग उठ रही है. पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और बस की फिटनेस रिपोर्ट खंगाली जा रही है।

जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा से आबकारी केस ट्रांसफर हो... केजरीवाल-सिसोदिया की दिल्ली हाई कोर्ट से अपील

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और अन्य ने एक्साइज केस को लेकर दिल्ली हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस को पत्र लिखा है. उन्होंने एक्साइज केस को जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा से हटाकर किसी दूसरी बेंच को ट्रांसफर करने की मांग की है. उन्होंने जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा के खिलाफ भेदभाव के सबूत पेश किए हैं. उन्होंने कहा है कि सुप्रीम कोर्ट ने एक्साइज केस में उनके सभी ऑर्डर पलट दिए हैं. निष्पक्षता तय करने और न्याय में जनता का भरोसा बनाए रखने के लिए ट्रांसफर करें. अरविंद केजरीवाल ने पत्र में लिखा है, अगर यही बेंच सुनवाई करती है तो निष्पक्ष सुनवाई संभव नहीं हो पाएगी. 'इंसाफ सिर्फ होना ही नहीं चाहिए, होते हुए नज़र भी आना चाहिए'. जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा का रवैया उन पर संदेह पैदा करता है. आरोप मुक्त होने के खिलाफ सीबीआई की अपील पर पहली ही सुनवाई में उन्होंने दूसरा पक्ष सुने बिना जांच अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई पर रोक लगा दी।

पहली नजर में निचले आदेश को गलत बता दिया

केजरीवाल ने कहा, उन्होंने पहली नजर में निचले आदेश को गलत भी बता दिया. ईडी के केस में सुनवाई पर रोक लगा दी. आबकारी नीति मामले में इससे पहले दिए अपने किसी फैसले में उन्होंने किसी भी आरोपी को कोई राहत नहीं दी थी. उनके कई फैसलों को बाद में जाकर सुप्रीम कोर्ट ने रद्द किया और आरोपियों को ज़मानत मिल पाई. बता दें कि दो दिन पहले ही दिल्ली हाईकोर्ट ने आबकारी नीति में कथित घोटाले मामले से जुड़े सीबीआई मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट से बरी अरविंद केजरीवाल समेत सभी 23 लोगों को नोटिस जारी किया था. इस मामले में अगली सुनवाई 16 मार्च को होगी. हाई कोर्ट केस की जांच करने वाले सीबीआई ऑफिसर के खिलाफ डिपार्टमेंटल एक्शन लेने के ट्रायल कोर्ट के ऑर्डर पर रोक लगा चुका है।

रिहाई के आदेश पर रोक लगाने से कोर्ट का इनकार

सीबीआई की याचिका पर सोमवार को हाई कोर्ट ने केजरीवाल-सिसोदिया समेत अन्य की रिहाई के आदेश पर रोक लगाने से भी इनकार कर दिया था. सीबीआई ने लोअर कोर्ट के फैसले को चुनौती देते हुए हाई कोर्ट में याचिका दायर की है. सीबीआई की तरफ से स्त्र तुषार मेहता ने केजरीवाल समेत 23 लोगों की रिहाई के आदेश पर रोक लगाने की मांग की थी।

यह देश के लिए शर्म की बात है: एसजी

इस पर कोर्ट ने मना कर दिया. जस्टिस ने ट्रायल कोर्ट से ईडी केस को तब तक टालने को भी कहा, जब तक हाई कोर्ट सभी आरोपियों को डिस्चार्ज करने के खिलाफ सीबीआई की रिवीजन अर्जी पर फैसला नहीं कर लेता. एसजी तुषार मेहता ने कहा था, यह इस देश की राजधानी दिल्ली के इतिहास के सबसे बड़े घोटालों में से एक है और उनकी राय में यह देश के लिए शर्म की बात है।

साजिश का हर पहलू साबित भी हुआ

उन्होंने कहा, इसकी साइंटिफिक जांच की गई थी. साजिश का हर पहलू साबित भी हुआ. आरोप लगाया कि हवाला के जरिए और कई हिस्सों में पैसे ट्रांसफर किए गए. ऐसे मामले में कोई पार्टी बदले की भावना वगैरह का आरोप लगा सकती है. सभी खास गवाहों से मजिस्ट्रेट के सामने पूछताछ की गई।

तीन साल में तीन आईसीसी ट्रॉफी: भारतीय क्रिकेट का स्वर्णिम दौर और खिलाड़ियों की मेहनत का ऐतिहासिक फल

अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला गया टी-20 वर्ल्ड कप 2026 का फाइनल भारतीय क्रिकेट के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो गया। भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड को 96 रन से हराकर तीसरी बार टी-20 वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ भारत ने केवल एक टूर्नामेंट नहीं जीता, बल्कि लगातार सफलता की ऐसी कहानी लिखी जिसने दुनिया को भारतीय क्रिकेट की ताकत का एहसास करा दिया। पिछले तीन वर्षों में तीन आईसीसी ट्रॉफी जीतना इस बात का प्रमाण है कि टीम इंडिया ने निरंतरता, आत्मविश्वास और सामूहिक मेहनत से सफलता का नया अध्याय रचा है। भारत की इस शानदार जीत में बल्लेबाजों से लेकर गेंदबाजों तक सभी खिलाड़ियों का योगदान रहा। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने 5 विकेट के नुकसान पर 255 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। यह टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल के इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर भी बन गया। इतने बड़े लक्ष्य के सामने न्यूजीलैंड की टीम दबाव में आ गई और पूरी टीम 159 रन पर ही सिमट गई। इस प्रकार भारत ने न केवल जीत दर्ज की बल्कि टी-20 क्रिकेट में अपनी आक्रामक शैली का शानदार प्रदर्शन भी किया। इस ऐतिहासिक जीत का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि भारत ने तीन साल के भीतर तीन आईसीसी ट्रॉफियां जीतने का कारनामा किया है। वर्ष 2024 में भारत ने टी-20 वर्ल्ड कप जीतकर लगभग 17 वर्षों बाद इस खिताब को अपने नाम किया था। इसके बाद 2025 में चैंपियंस ट्रॉफी जीतकर टीम ने अपनी लय बरकरार रखी और अब 2026 में फिर से टी-20 वर्ल्ड कप जीतकर विश्व क्रिकेट में अपना दबदबा साबित कर दिया। लगातार दो बार टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाली भारत पहली टीम बन गई है और यह उपलब्धि भारतीय क्रिकेट के स्वर्णिम दौर को दर्शाती है। टीम इंडिया की सफलता के पीछे केवल प्रतिभा नहीं बल्कि खिलाड़ियों की कठिन मेहनत, अनुशासन और टीम भावना भी है। इस टूर्नामेंट में भारतीय बल्लेबाजों ने जिस आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी की, उसने विरोधी टीमों के गेंदबाजों को लगातार दबाव में रखा। पूरे टूर्नामेंट में भारत ने 106 छक्के लगाए, जो किसी भी टी-20 वर्ल्ड कप के एक संस्करण में सबसे अधिक हैं। यह आंकड़ा इस बात का प्रमाण है कि भारतीय टीम अब केवल तकनीकी रूप से मजबूत ही नहीं बल्कि आक्रामक क्रिकेट खेलने में भी सबसे आगे है। इस शानदार प्रदर्शन में सबसे बड़ा योगदान रहा भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन का। संजू सैमसन ने पूरे टूर्नामेंट में 321 रन बनाए और भारत के लिए एक टी-20 वर्ल्ड कप संस्करण में सबसे अधिक रन बनाने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। इससे पहले यह रिकॉर्ड विराट कोहली के नाम था, जिन्होंने 2014 में 319 रन बनाए थे। संजू की बल्लेबाजी में आत्मविश्वास, आक्रामकता और जिम्मेदारी का अद्भुत संतुलन दिखाई दिया, जिसने भारत को कई कठिन मैचों में जीत दिलाई। संजू सैमसन की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि उन्होंने बड़े मैचों में शानदार प्रदर्शन किया। सेमीफाइनल और फाइनल जैसे दबाव भरे मुकाबलों में भी उन्होंने अर्धशतक लगाकर टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। पूरे टूर्नामेंट में उनका स्ट्राइक रेट लगभग 200 के आसपास रहा, जो टी-20 क्रिकेट के लिए बेहद प्रभावशाली माना जाता है। उनके इस शानदार प्रदर्शन के कारण उन्हें प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट भी चुना गया। भारतीय टीम की बल्लेबाजी में इंसान किशन और अभिषेक शर्मा ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ईशान किशन ने पूरे टूर्नामेंट में 317 रन बनाए और कई मैचों में तेज शुरुआत देकर टीम को मजबूत आधार दिया। वहीं अभिषेक शर्मा ने फाइनल में केवल 18 गेंदों में अर्धशतक लगाकर दर्शकों को रोमांचित कर दिया। उनकी आक्रामक बल्लेबाजी ने न्यूजीलैंड के गेंदबाजों को पूरी तरह से दबाव में ला दिया। टीम इंडिया की गेंदबाजी भी इस टूर्नामेंट में उतनी ही प्रभावशाली रही। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए टूर्नामेंट में सबसे अधिक विकेट हासिल किए। फाइनल मैच में उन्होंने केवल 15 रन देकर 4 विकेट लिए और न्यूजीलैंड की बल्लेबाजी की कमर तोड़ दी। उनकी सटीक लाइन-लेंथ और दबाव में शानदार गेंदबाजी ने भारत की जीत को आसान बना दिया। यही कारण है कि उन्हें फाइनल का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी भी चुना गया। भारतीय टीम की सफलता में ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या का योगदान भी बेहद महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने पूरे टूर्नामेंट में बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन किया। हार्दिक ने 200 से अधिक रन बनाए और साथ ही महत्वपूर्ण विकेट भी हासिल किए। सेमीफाइनल में उनके ऑलराउंड प्रदर्शन ने भारत को इंग्लैंड के खिलाफ रोमांचक जीत दिलाई, जिसने टीम का आत्मविश्वास और भी मजबूत कर दिया।

फाइनल मुकाबले में शिवम दुबे की छोटी लेकिन विस्फोटक पारी भी बेहद अहम साबित हुई। जब भारत की पारी थोड़ी धीमी पड़ती दिखाई दे रही थी, तब शिवम दुबे ने अंतिम ओवरों में तेज रन बनाकर टीम का स्कोर 255 तक पहुंचा दिया। उनकी केवल 8 गेंदों में 26 रन की पारी ने न्यूजीलैंड के सामने बेहद मुश्किल लक्ष्य खड़ा कर दिया।

इस पूरी सफलता के पीछे टीम के कोच गौतम गम्भीर की रणनीति और मार्गदर्शन भी महत्वपूर्ण रहा। गंभीर पहले खिलाड़ी के रूप में बड़े फाइनल मैचों में शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं और अब कोच के रूप में भी उन्होंने टीम को सफलता दिलाई है। उनकी सोच, रणनीति और खिलाड़ियों पर विश्वास ने टीम को लगातार जीत दिलाने में बड़ी भूमिका निभाई। भारतीय टीम की इस जीत ने पूरे देश में उत्साह और गर्व का माहौल बना दिया। जीत के बाद देशभर में लोगों ने सड़कों पर उतरकर जश्न मनाया। कई जगहों पर आतिशबाजी हुई और लोग तिरंगा लेकर खुशी से झूमते नजर आए। यह जीत केवल खिलाड़ियों की नहीं बल्कि पूरे देश की जीत बन गई। दरअसल, खेल केवल प्रतिभा का नहीं बल्कि मेहनत, धैर्य और टीम भावना का परिणाम होता है। भारतीय खिलाड़ियों ने लगातार अभ्यास, फिटनेस और मानसिक मजबूती के साथ खुद को तैयार किया और कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी। यही कारण है कि उनकी मेहनत का फल अब लगातार जीत के रूप में सामने आ रहा है।

टी-20 वर्ल्ड कप 2026 की यह जीत केवल एक ट्रॉफी नहीं बल्कि भारतीय क्रिकेट के आत्मविश्वास और भविष्य की दिशा का प्रतीक है। यह सफलता आने वाली पीढ़ियों के खिलाड़ियों को प्रेरणा देगी कि अगर मेहनत, समर्पण और टीमवर्क के साथ खेला जाए तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

भारतीय क्रिकेट टीम ने इस जीत के साथ दुनिया को यह संदेश दे दिया है कि वह केवल मजबूत टीम ही नहीं बल्कि विश्व क्रिकेट की नई शक्ति बन चुकी है। खिलाड़ियों की मेहनत, कोच की रणनीति और करोड़ों भारतीयों के समर्थन ने मिलकर यह ऐतिहासिक सफलता संभव बनाई है। यही कारण है कि आज हर भारतीय गर्व से कह सकता है कि यह जीत मेहनत, विश्वास और सपनों की जीत है।

कांतिलाल मांडोत

संपादकीय

रैडक्लिफ ने तो दे दिया था हमें लाहौर

भारत विभाजन की जब-जब चर्चा चलेगी, नए-नए तथ्य सामने आते जाएंगे। प्रख्यात पत्रकार कुलदीप नैयर की एक कृति 'स्कूप' में इस विषय पर रोचक एवं अनूठी जानकारी दी गई है। विभाजन के प्रमुख केंद्र बिन्दु रैडक्लिफ के साथ श्री नैयर की वर्ष 1971 में लंदन में एक विस्तृत चर्चा हुई थी। सीधा व पहला सवाल तब यह पूछा गया था कि 'क्या आप सीमा-निर्धारण से सन्तुष्ट हैं?' तो रैडक्लिफ का तात्कालिक उत्तर था, 'मैंने तो लगभग पूरा लाहौर आपको दे दिया था मगर बाद में मुझे लगा कि यदि लाहौर भी न बचा तो पाकिस्तान के पास कोई भी बड़ा शहर नहीं बचेगा।'

कुलदीप नैयर बताते हैं कि 1971 में यह मुलाकात रैडक्लिफ के आवास पर ही हुई थी। रैडक्लिफ ने स्वयं ही अपने आवास का द्वार खोला और अनौपचारिक रूप में स्वयं ही दोनों के लिए चाय बनाई। मुझे महसूस होने लगा था कि विभाजन के बाद की हिंसा के लिए स्वयं भी गहन पछतावे की मुद्रा में था। उसने यह भी स्वीकार किया कि 'मुझे इसे महत्वपूर्ण व संवेदनशील कार्य के लिए केवल 5-6 सप्ताह ही मिले। मौसम भी गर्मियों का था। मेरे लिए सीमा पर जाकर स्वयं सर्वेक्षण करना भी संभव नहीं था।'

रेडक्लिफ ने बताया कि उसके पास समय बहुत कम था। सिर्फ 5-8 हफ्ते में भारत की परिस्थितियों से अनजान थी। पहली बार भारत आया था, अगर मुझे दो-तीन साल मिलते तो मैं बेहतर काम कर सकता था। मैंने बहुत पुराने नक्शों का इस्तेमाल किया क्योंकि गर्मी के कारण सीमा पर जाकर सर्वेक्षण करना असंभव था। मगर पाकिस्तानियों का यह आरोप गलत है कि मैंने हिंदुओं का पक्ष लिया। मैं मुसलमानों के प्रति अधिक उदार था और लाहौर देकर मैंने उन्हें और भी एहसानमंद बनाया।

मैंने लगभग भारत को लाहौर दे ही दिया था लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि पाकिस्तान के पास कोई बड़ा शहर नहीं होगा। मैंने पहले ही कोलकाता को भारत के लिए आरक्षित कर रखा था।

मैं यह मान चुका था कि लाहौर में हिंदू और सिख बहुसंख्यक थे और संपत्ति में भी काफी समृद्ध थे। फिर भी पाकिस्तान में बड़े शहरों की कमी के कारण उनके पास कोई विकल्प नहीं था। अभी भी यह अस्पष्ट है कि भारत और पाकिस्तान की सीमा रेखाएं कैसे खींची गईं। हालांकि सीमा आयोग में चार और सदस्य थे - दो भारत से, जस्टिस मेहर चंद महाजन और जस्टिस तेजा सिंह और दो पाकिस्तान से, जस्टिस दीन मोहम्मद और मोहम्मद मुनीर, वे सभी सेवारत न्यायाधीश थे।

यह निर्णय रेडक्लिफ ने लिया था क्योंकि आयोग विभाजित था, एक तरफ भारत के सदस्य थे और दूसरी तरफ पाकिस्तान के। रेडक्लिफ ने यह भी कहा था कि भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाएं निर्धारित करते समय मेरे पास कोई निश्चित नियम नहीं थे। सीमांकन करने से पहले ही मैंने वैसे पर्याप्त जानकारी एकत्र कर ली थी।

'मेरे काम का सबसे पेचीदा हिस्सा पंजाब और बंगाल के आखिरी हिस्से का धार्मिक आधार पर विभाजन करना था। इसलिए लाहौर को भारत को देने और फिर उसे पाकिस्तान के पक्ष में बदलने का उनका निर्णय समझ में आता था।' मैंने किसी न किसी तरह का संतुलन बनाए रखने की कोशिश की थी। पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा रेडक्लिफ का नाम सुझाने का लाहौर को पाकिस्तान को देने के निर्णय में बदलाव से कोई लेना-देना नहीं था। मैंने पूछा, क्या आप भारत और पाकिस्तान के बीच खींची गई सीमा रेखाओं से संतुष्ट हैं?

'मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, मेरे पास समय इतना कम था कि मैं इससे बेहतर काम नहीं कर सकता था। अगर मुझे उतना ही समय दिया जाता, तो मैं वही काम करता। हालांकि, अगर मुझे दो से तीन साल मिलते तो शायद मैं अपने काम में और सुधार कर पाता'। सीमांकन करने से पहले मैंने उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों के ऊपर केवल एक बार डकोटा विमान उड़ाया था। उन्होंने कहा, 'यदि कुछ लोगों की आकांक्षाएं पूरी नहीं हुई तो इसका दोष उन राजनीतिक व्यवस्थाओं में है जिनसे मेरा कोई लेना-देना नहीं है।' कुलपति नैयर ये बताते हैं कि जब वह मिलने गए तो रेडक्लिफ ने टाई के साथ जैकेट पहनी हुई थी, जो एक तरह का औपचारिक पहनावा था। लंबे समय तक न्यायाधीश रह चुके होने के कारण शायद विदेशियों से मिलते समय जैकेट पहनना उनकी आदत थी लेकिन उनके व्यवहार में कोई औपचारिकता नहीं थी। उनसे बातचीत के दौरान मैंने उन्हें एक सरल और स्पष्टवादी व्यक्ति पाया। जब मैंने उनके फ्लैट की घंटी बजाई तो उन्होंने खुद दरवाजा खोला। कमरा पुराने फर्नीचर से भरा हुआ था जिसे उन्होंने शायद वर्षों में इकट्ठा किया होगा। बैठक का कमरा सादा लग रहा था। उनके पास कोई नौकर या नौकरानी नहीं थी क्योंकि वे खुद रसोई में जाते थे, जिसे मैं बैठक में सोफे से देख सकता था, चाय बनाने के लिए केतली को चूल्हे पर रखने के लिए।

रेडक्लिफ ने यह भी बताया था कि वह सीमा आयोग के सदस्यों से खुश नहीं थे। उनका कहना था कि वे सिर्फ अपने देश का पक्ष रख रहे थे। दोनों पक्ष अधिकतम क्षेत्र चाहते थे और उनके तर्क एक-दूसरे के विपरीत थे। रेडक्लिफ ने बताया कि पूर्वी बंगाल के एक मुस्लिम सदस्य ने उनसे निजी तौर पर मिलकर दार्जिलिंग को पाकिस्तान में शामिल करने की गुहार लगाई। उन्होंने कहा, 'मेरा परिवार हर गर्मी में दार्जिलिंग जाता है और अगर यह जगह भारत को मिल गई तो हमारे लिए बहुत मुश्किल होगा।' रेडक्लिफ ने भारतीय सीमा आयोग के सदस्य मेहरचंद महाजन की बहुत प्रशंसा की, जो बाद में भारत के मुख्य न्यायाधीश बने। उन्होंने महाजन की विद्वत्ता और कानूनी ज्ञान से रेडक्लिफ को प्रभावित किया।

'उन्हें मेरा आभारी होना चाहिए क्योंकि मैंने उन्हें लाहौर दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया, जबकि वह वास्तव में भारत का हिस्सा बनने लायक था। वैसे भी, मैंने हिंदुओं की तुलना में मुसलमानों का अधिक पक्ष लिया।'

उन्हें सबसे ज्यादा दुख इस आरोप से हुआ था कि उन्होंने माउंटबेटन के दबाव में अपनी रिपोर्ट बदल दी थी। पाकिस्तानियों का आरोप था कि माउंटबेटन ने रेडक्लिफ पर दबाव डाला था कि वे भारत को फिरोजपुर और जीरा तहसीलें सौंप दें ताकि जम्मू-कश्मीर से संपर्क स्थापित हो सके।

जो कुछ हुआ उस पर रैडक्लिफ को भी खेद था लेकिन वह इस कथन पर अडिग था कि इसने भारत को फिरोजपुर और जीरा इसलिए दिए क्योंकि उन्हें ऐसा महसूस हुआ। उन पर कोई दबाव नहीं था। हालांकि, उनसे रिपोर्ट देने का आग्रह किया गया।

22 जुलाई, 1947 को रेडक्लिफ को लिखे पत्र में माउंटबेटन ने कहा कि लाहौर में उनकी पंजाब विभाजन समिति के साथ चर्चा हुई थी। समिति को दिए गए अपने आश्वासन का जिक्र करते हुए कि वे रेडक्लिफ को पंजाब सीमा निर्धारण पुरस्कार की यथाशीघ्र घोषणा की आवश्यकता के बारे में लिखेंगे, माउंटबेटन ने आगे कहा, 'पंजाब विभाजन समिति में इस बात पर जोर दिया गया कि यदि 15 अगस्त से ठीक पहले अंतिम समय में अवार्ड की घोषणा की गई तो अशांति का खतरा बहुत बढ़ जाएगा।' मुझे पता है कि आप इसे पूरी तरह समझते हैं लेकिन मैंने आपसे वादा किया था कि मैं इस बारे में फिर से बात करूंगा और कहूंगा कि पुरस्कार की घोषणा के लिए आप जितने भी अतिरिक्त दिन का समय निकाल सकें, हम सभी उसके लिए आभारी होंगे। क्या 10 तारीख तक इसे जारी करने की कोई संभावना है?'

नवप्रवर्तन राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि के दिशा प्रवर्त्तक

(समेकित प्रयासों की भूमिका रचनात्मक)

नवप्रवर्तन राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि के दिशा प्रवर्त्तक होते हैं। किसी भी देश में समस्त प्रयासों की रचनात्मक भूमिका होनी चाहिए उसी के फल स्वरुप राष्ट्र का आर्थिक तंत्र मजबूत तथा शक्तिशाली होता है।

जीवन है चलने का नाम,गति का नाम ही जीवन है। सभी समाज एवं राष्ट्र की संस्कृतियों ने यह माना है कि मनुष्य और जानवरों के बीच विभेद करने वाला प्रमुख कारक मस्तिष्क है, और मस्तिष्क ही मनुष्य को सृजनात्मक शक्ति प्रदान करता है। मनुष्य के रचनात्मक विचार नयापन लाते हैं उसे पूर्व काल से पृथक करते हुए प्रगति के पथ प्रदर्शक बनते हैं। इसे ही नवप्रवर्तन माना जाता है। नवप्रवर्तन और कुछ नहीं बल्कि समाज की परंपरागत और प्रगतिशील मानसिकता के बीच एक बड़ी लाइन खींचना है। इसीलिए यह माना जाता है कि नवप्रवर्तन समाज मैं 3% नवाचार का निर्धारित है, शेष 97 प्रतिशत परंपरावादी विचारों के लिए है। पुराने समय से ही आर्थिक समृद्धि में नवप्रवर्तन की भूमिका को स्वीकार किया गया है चाहे वह मनुष्य के खाद्य संग्राहक से खाद्य उत्पादक में परिवर्तन हो या फिर 18वीं सदी में यूरोप की वाणिज्य क्रांति का औद्योगिक क्रांति में बदलना इन सभी में नवप्रवर्तन ने प्रेरक का काम किया है। हम चौथी क्रांति की तरफ बढ़ रहे हैं, इसलिए कहा जाता है कि विचारों को कभी सुसुप्त होने या मरने ना दिया जाए। हो सकता है आपके विचार करोड़ों डॉलर के हो । वर्तमान अर्थव्यवस्था में समृद्धि के इंजन माने जाने वाले सनराइज उद्योग, सॉफ्टवेयर, खाद्य संस्करण, इलेक्ट्रॉनिक्स, रोबोटिक के विकास के पीछे भी नवप्रवर्तन का हाथ है। इसी के आधार पर नगरों को स्मार्ट नगरों में बदला जा रहा है। नवप्रवर्तन या नवाचार से मैं सिर्फ मानव जीवन की परेशानियों को न्यूनतम किया है, बल्कि मानव जीवन को आसान और सुखमय भी बनाया जा रहा है। नवप्रवर्तन और मस्तिष्क की खोज के कारण ही जापान में 6.5 रेक्टर का भूकंप सामान्य माना जाता है,जबकि भारत में यह तबाही ला सकता है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में पेनिसिलिन जैसी प्रतिजैविक (एंटीबायोटिक) के अविष्कार ने रोगों की संभावना को कम कर दिया एवं स्वास्थ्य प्रणाली के भावी विकास को एक गति प्रदान की है। जेनेरिक औषधि, रोबोटिक सर्जरी, जीन एडिटिंग जैसी प्रक्रिया स्वास्थ्य सुधार हेतु एक मजबूत आधार मानी जाती है। सामाजिक विकास आर्थिक समन्वयक और न्याय प्रणाली में पारदर्शिता लाने का प्रयास नवप्रवर्तन के योगदान से ही आया है। सोशल मीडिया जैसे नवीन प्लेटफार्म ने व्यक्ति की अभिव्यक्ति के अधिकार को स्वतंत्र किया है। भारतीय अर्थव्यवस्था के ग्रामीण से आधुनिक रूपांतरण में कृषी क्षेत्र से भारी उद्योगों पर बल देने में किसानों के देश को सॉफ्टवेयर उद्योग का सिरमौर बनाने में नवप्रवर्तन का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय कृषि में भी आधुनिकीकरण और पाश्चात्य उपकरण का प्रादुर्भाव भी नवीन नवाचार के कारण संभव हुआ है। भारतीय राज्य को लोक कल्याणकारी राज्य से लोगों के सशक्तिकरण करने वाले राज्य में बदलने की नवप्रवर्तन की भूमिका अत्यंत सराहनीय है। इसके कारण भार मानी जाने वाली महिलाएं अब भार ढोने वाली की भूमिका में आ चुकी हैं। इसी तरह न्यायिक क्षेत्र में जनहित याचिका की अवधारणा ने न्याय की अवधारणा को सर्वांगीण बनाने में सहायता प्रदान की है। यह अलग बात है कि केवल नवप्रवर्तन को ही एकमात्र निर्धारक कारक के रूप में नहीं माना जा सकता क्योंकि नवीन विचारों को स्वीकार करना और आगे बढ़ना बहुत हद तक समाज पर निर्भर करता है। पश्चिमी देशों में नवीन विचारों को जगह देने के कारण वहां पुनर्जागरण आया है। हमें समाज को नव परिवर्तन की तरफ जागरूक करने की आवश्यकता होगी और नवप्रवर्तन में ज्यादा से ज्यादा आर्थिक मदद देकर उस और और ज्यादा विचार-विमर्श कर नीति बनाने की आवश्यकता होगी। इस तरह हमें महात्मा बुद्ध के कथन अनुसार अपने या दूसरों के विचारों नवप्रवर्तनों को तर्क बुद्धि पर देखे जाने की जरूरत है, और फिर आगे बढ़ने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संजीव ठाकुर

जेब में पलता अदृश्य ज़हर: सोशल मीडिया और युवा मन का संकट

[आभासी सफलता का दबाव और युवा मन का अवसाद]
[सोशल मीडिया: मनोरंजन नहीं, मानसिक प्रदूषण का नया दौर]

कभी मानव सभ्यता को खतरा बाहरी प्रदूषणों से था—धुएँ से, प्लास्टिक से, रसायनों से। पर आज सबसे घातक प्रदूषण हमारी जेब में रखा हुआ है—मोबाइल की चमकती स्क्रीन और उस पर दौड़ती सोशल मीडिया की दुनिया। यह प्रदूषण दिखाई नहीं देता, पर मन और चेतना को भीतर से क्षीण कर देता है। यह शरीर को नहीं, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आशा को खा जाता है। यही कारण है कि बीते कुछ वर्षों में युवाओं में अवसाद, अकेलापन और आत्महत्या की घटनाओं के पीछे सोशल मीडिया की भूमिका तेजी से चर्चा में आई है। यह तकनीक सुविधा का साधन बनकर आई थी, लेकिन अनियंत्रित उपयोग ने इसे मानसिक विष में बदल दिया है।

सोशल मीडिया का सबसे गहरा असर युवा मन की तुलना करने की प्रवृत्ति पर पड़ता है। यह मंच एक ऐसा आभासी संसार रच देता है जहाँ हर व्यक्ति अपनी जिंदगी का सबसे चमकदार पक्ष ही दिखाता है। महंगी कारें, शानदार यात्राएँ, आकर्षक चेहरे और लगातार मिलती सफलता—इन दृश्यों को देखकर एक सामान्य युवा अनजाने में स्वयं को असफल समझने लगता है। उसे लगने लगता है कि बाकी सब लोग जीवन की दौड़ में उससे बहुत आगे निकल चुके हैं। यही निरंतर तुलना धीरे-धीरे आत्मविश्वास को कमजोर कर देती है और व्यक्ति को भीतर से तोड़ने लगती है।

मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि सोशल मीडिया पर मिलने वाली प्रतिक्रिया—लाइक, कमेंट और शेयर—एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक लत पैदा करती है। हर बार जब किसी पोस्ट पर प्रतिक्रिया मिलती है, तो मस्तिष्क में डोपामिन नामक रसायन सक्रिय होता है, जो क्षणिक खुशी देता है। लेकिन यही खुशी व्यक्ति को बार-बार उसी प्रतिक्रिया की तलाश में बाँध देती है। जब अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं मिलती, तो निराशा और बेचैनी बढ़ जाती है। धीरे-धीरे यह मानसिक निर्भरता व्यक्ति के आत्मसम्मान को पूरी तरह बाहरी स्वीकृति पर आश्रित बना देती है।

इस समस्या का दूसरा गंभीर पक्ष है साइबर बुलिंग। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी, लेकिन इसके साथ ही अपमान और उत्पीड़न के नए रास्ते भी खोल दिए। गुमनाम पहचान के पीछे छिपकर लोग दूसरों का मजाक उड़ाते हैं, अपमानजनक टिप्पणियाँ करते हैं या निजी तस्वीरों को वायरल कर देते हैं। किशोर और युवा उम्र में आत्मसम्मान बेहद संवेदनशील होता है; ऐसे में सार्वजनिक अपमान मानसिक आघात बन जाता है। कई मामलों में यह अपमान इतना गहरा होता है कि पीड़ित युवा स्वयं को समाज के सामने असहाय महसूस करने लगता है।

एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सोशल मीडिया युवाओं के वास्तविक संबंधों को कमजोर कर रहा है। पहले दुख या तनाव के समय व्यक्ति परिवार, मित्रों या समाज के बीच समाधान खोजता था। अब वही व्यक्ति अपनी भावनाएँ स्क्रीन पर उकेर देता है। लेकिन वर्चुअल दुनिया में संवेदनशीलता का स्थान अक्सर प्रतिक्रिया और मनोरंजन ने ले लिया है। कई बार गंभीर पीड़ा को भी लोग हल्के में लेते हैं या उसे मजाक बना देते हैं। परिणामस्वरूप पीड़ित व्यक्ति और अधिक अकेला महसूस करता है।

डिजिटल लत का प्रभाव युवाओं की दिनचर्या पर भी स्पष्ट दिखाई देता है। देर रात तक मोबाइल पर सक्रिय रहने से नींद प्रभावित होती है, जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद आवश्यक है। नींद की कमी से चिड़चिड़ापन, चिंता और ध्यान की कमी बढ़ती है। पढ़ाई, करियर और सामाजिक जीवन पर इसका नकारात्मक असर पड़ता है। जब व्यक्ति बार-बार असफलता या असंतुलन महसूस करता है, तो उसके भीतर निराशा की भावना और गहरी होने लगती है।

सोशल मीडिया की एक और खतरनाक प्रवृत्ति है 'परफेक्ट लाइफ' का भ्रम। यह मंच वास्तविक जीवन की जटिलताओं को छिपाकर केवल आकर्षक क्षणों को सामने लाता है। संघर्ष, असफलता और साधारण जीवन के पल लगभग गायब रहते हैं। परिणामस्वरूप देखने वाले युवाओं को लगता है कि बाकी सभी लोग खुश और सफल हैं, केवल वही संघर्ष कर रहे हैं। यही भ्रम धीरे-धीरे आत्मसम्मान को कमजोर करता है और जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करता है।

हाल के वर्षों में कई देशों में किए गए अध्ययन यह संकेत देते हैं कि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग और युवाओं में बढ़ती मानसिक समस्याओं के बीच स्पष्ट संबंध दिखाई देता है। चिंता, अवसाद, आत्महीनता और अकेलापन—ये सभी समस्याएँ अनियंत्रित सोशल मीडिया उपयोग से और बढ़ सकती हैं। जब व्यक्ति लगातार आभासी दुनिया में डूबा रहता है, तो वास्तविक जीवन की चुनौतियों से जूझने की उसकी क्षमता धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगती है।

इस समस्या का समाधान केवल तकनीक से दूरी बनाने में नहीं, बल्कि उसके विवेकपूर्ण उपयोग में छिपा है। युवाओं को यह समझाना आवश्यक है कि सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली दुनिया पूरी सच्चाई नहीं होती। यह जीवन का केवल चुना हुआ और सजाया हुआ हिस्सा होता है। यदि युवा इस अंतर को समझ लें, तो वे तुलना और निराशा के जाल से बच सकते हैं। इसके साथ ही डिजिटल अनुशासन भी उतना ही आवश्यक है—सीमित समय तक उपयोग, नियमित विश्राम और वास्तविक जीवन की गतिविधियों में भागीदारी।

परिवार और शिक्षा संस्थानों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। माता-पिता को बच्चों के साथ संवाद बनाए रखना चाहिए और उनकी भावनात्मक स्थिति को समझने का प्रयास करना चाहिए। विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य और डिजिटल साक्षरता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए, ताकि युवा ऑनलाइन दुनिया के खतरों को पहचान सकें। यदि समाज समय रहते संवेदनशीलता और समर्थन का वातावरण बना सके, तो कई दुखद घटनाओं को रोका जा सकता है।

आज तकनीक को नकारना संभव नहीं, क्योंकि वह हमारे जीवन की धड़कनों में शामिल हो चुकी है। प्रश्न यह नहीं कि सोशल मीडिया रहे या नहीं, बल्कि यह है कि हम उसका उपयोग किस विवेक और जिम्मेदारी के साथ करते हैं। यदि इसका संतुलित और सजग उपयोग हो, तो यही माध्यम ज्ञान, रचनात्मकता और संवाद का सशक्त सेतु बन सकता है। लेकिन यदि नियंत्रण खो जाए, तो यही चमकती स्क्रीन धीरे-धीरे मानसिक विष बनकर हमारी युवा पीढ़ी की ऊर्जा, आत्मविश्वास और आशा को भीतर ही भीतर निगल सकती है। आज आवश्यकता है कि समाज इस अदृश्य खतरे को गंभीरता से समझे। प्लास्टिक पर्यावरण को प्रदूषित करता है, लेकिन सोशल मीडिया का असंतुलित प्रभाव मन और विचारों को प्रदूषित कर सकता है। यदि हम युवाओं को सुरक्षित और सशक्त भविष्य देना चाहते हैं, तो हमें उन्हें आभासी चमक से अधिक वास्तविक जीवन के मूल्य सिखाने होंगे। तभी यह पीढ़ी निराशा के अंधेरे में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और संतुलन की रोशनी में आगे बढ़ सकेगी।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

संसद सत्र और भारतीय हित

आज से संसद के बजट सत्र का दूसरा चरण शुरू हो रहा है और देश घरेलू स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक विभिन्न राजनीतिक झंझावतों से घिरा हुआ लग रहा है। अतः बहुत स्वाभाविक है कि संसद सत्र की बैठकों में विपक्ष व सत्तारूढ़ दलों के बीच जमकर खींचातानी हो। लोकसभा में जहां इसके अध्यक्ष श्री ओम बिरला को पद से हटाने के प्रस्ताव पर आज सदन में लम्बी बहस होने के बाद मतदान हो, वहीं दूसरी तरफ राज्यसभा में विपक्ष पश्चिम एशिया में चल रहे ईरान-इजराइल युद्ध से उपजे भारत को प्रभावित करने वाले सवालों को केन्द्र में लाए और सरकार को कठघरे में खड़ा करने का प्रयास करे। इस सन्दर्भ में सबसे बड़ा सवाल भारत के प्रति अमेरिकी रुख को लेकर उठाया जा सकता है क्योंकि इस युद्ध में अमेरिका खुलकर इजराइल का साथ दे रहा है और जंग में बराबर का सहभागी है।

पिछले कुछ दिनों से पूरे देश में भारतीय संप्रभुता को लेकर खासी बहस इसलिए छिड़ी हुई है क्योंकि अमेरिका की तरफ से आधिकारिक बयान जारी कर कहा गया है कि उसने भारत को रूस से कच्चा पैट्रोलियम तेल खरीदने के लिए 30 दिन की मोहलत दे दी है। यह मोहलत उसने पिछले दिनों भारत के साथ हुए व्यापार समझौते के मोटे मसौदे की शर्तों के अनुरूप दी है परन्तु इसके साथ यह भी हकीकत है कि भारत-अमेरिका के बीच अभी तक तफसील में कारोबार की शर्तों का चयन नहीं हुआ है और इस मोर्चे पर दोनों देशों के बीच बातचीत अभी होनी है। विपक्ष इसे भारत सरकार की कूटनीतिक व व्यापारिक असफलता बता रहा है और कह रहा है कि स्वतन्त्र भारत के इतिहास की यह अभूतपूर्व घटना है क्योंकि भारतीय हितों की नाप-जोख कोई दूसरा देश अमेरिका कर रहा है। दरअसल कूटनीतिक मोर्चे पर भारत बहुत सावधानी के साथ चलते हुए यह सिद्ध करना चाहता है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों का स्वयं संरक्षक है और अमेरिका को इस बारे में फैसला लेने का कोई अधिकार नहीं है। इस सन्दर्भ में मोदी सरकार के मौन को विपक्ष कम करके आंकने की गलती कर रहा है, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की आक्रामक कूटनीति को देखते हुए भारत शान्त रहते हुए अपने किये जा रहे कार्यों से उसका जवाब देना चाहता है इसीलिए सरकारी सूत्र बता रहे हैं कि भारत द्वारा रूस से लगातार कच्चा तेल खरीदा जा रहा है।

विगत 2 फरवरी को भारत व अमेरिका के बीच व्यापार समझौता होने की घोषणा वाशिंगटन से की गई थी जिसमें कहा गया था कि अब से भारत रूस से तेल नहीं खरीदेगा और यदि वह खरीदारी करता है तो अमेरिका उसके आयातित माल पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाने के लिए स्वतन्त्र होगा। इसमें यह भी कहा गया था कि अमेरिका अपने विभिन्न मन्त्रालयों की एक निगरानी समिति बनाकर देखेगा कि भारत कहीं रूस से तेल तो नहीं खरीद रहा। अमेरिका के इस दावे की तस्दीक हमें इसके बाद भारत सरकार द्वारा किये गये फैसलों से करनी होगी क्योंकि कूटनीति में जरूरी नहीं होता कि ईंट का जवाब पत्थर से ही दिया जाये, बल्कि यह तय करना होता है कि अपने हितों को किस रास्ते से साधा जाये। यह रास्ता बिना आवाज निकाले अपने कामों का भी हो सकता है। अतः मोदी सरकार ने अमेरिका से बिना उलझे रूस से कच्चा तेल खरीदना जारी रखा जिसे इकतरफा की गई अमेरिकी घोषणा के जवाब में देखा जाना चाहिए। इसके साथ दूसरा मसला हिन्द महासागर में ईरानी युद्ध पोत को अमेरिकी नौसैनिक पनडुब्बी द्वारा डुबोये जाने का है। यह युद्ध पोत भारत के निमन्त्रण पर विशाखापत्तनम में आयोजित विभिन्न देशों के संयुक्त नौसैनिक युद्धाभ्यास में भाग लेने आया था जो यह कार्यक्रम पूरा होने के बाद वापस अपने देश ईरान जा रहा था। अमेरिका ने ईरान के विरुद्ध चल रहे युद्ध के दौरान इसे नष्ट किया। यह युद्ध पोत श्रीलंका के पास हिन्द महासागर के अन्तर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र में था। बेशक अमेरिका का यह कार्य निश्चित रूप से निन्दनीय था क्योंकि ईरान-इजराइल युद्ध से हिन्द महासागर क्षेत्र अभी तक अछूता है। विपक्ष इस मुद्दे पर भी मोदी सरकार को कठघरे में खड़ा कर रहा है परन्तु भारत ने ईरान के ही एक अन्य युद्धपोत को ही केरल के कोच्चि बन्दरगाह में लंगर डालने की इजाजत देकर अमेरिकी हिमाकत का अपने तरीके से जवाब दे दिया है। इस युद्धपोत में कुछ तकनीकी खराबी आ गई थी जिसकी वजह से ईरान ने भारत से विनय की थी कि वह उसे भारत में ठहरने की इजाजत दे जिससे युद्धपोत की खराबी दूर की जा सके। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के दौरान भारत के इस कदम का भी कमतर आंकलन नहीं किया जाना चाहिए।

दरअसल कूटनीति में यह भी नियम होता है कि अपने हितों को बिना आवाज किये भी साधो। भारत यदि यह रास्ता अपना रहा है तो इस पर क्यों हो-हल्ला किया जाये। हम जानते हैं कि डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका के विश्व के सबसे शक्तिशाली देश होने की वजह से जिस तरह की नीतियां अपना रहे हैं उससे संयुक्त राष्ट्रसंघ से लेकर विश्व की अन्य बहुदेशीय पंचायतें अप्रासंगिक बन चुकी हैं अतः भारत को अपना रास्ता इन्हीं चट्टानी दरारों से होकर बनाना पड़ेगा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार अमेरिका की नीतियों की वजह से पूरी दुनिया में भारी उथल- पुथल हो रही है और ऐसा लग रहा है कि इसके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पूरी विश्व व्यवस्था के क्रम को ही बदल कर रख देंगे। इसलिए भारत की संसद में जब बहस हो तो इस नई उभरती तस्वीर को भी सामने रखा जाये। क्योंकि पूरी दुनिया जानती है कि ईरान पर यह युद्ध तब थोपा गया है जबकि वह इस बात पर राजी हो गया था कि परमाणु बम बनाने की गरज से वह यूरेनियम का परिशोधन नहीं करेगा।

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन सुन भावविभोर हुए श्रद्धालु

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के शक्कर पट्टी मोहल्ले में चल रही श्रीमद्भागवत कथा में सोमवार को भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन हुआ। कथा सुनने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। संगीतमय कथा और भक्ति गीतों से पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहा। वृंदावन से पधारे कथा व्यास डॉ. रामकृपाल त्रिपाठी ने भगवान श्रीकृष्ण के जन्म और बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए बताया कि जब भगवान कृष्ण का जन्म हुआ तब अत्याचारी राजा कंस उन्हें मारने के लिए कई प्रयास करता रहा। कथा के दौरान पूतना प्रसंग में कथा व्यास ने बताया कि कंस के कहने पर पूतना सुंदर स्त्री का रूप धारण कर नंदगांव पहुंची। उसका उद्देश्य बालक कृष्ण को विषपान कराकर मारना था। वह छलपूर्वक बालकृष्ण को गोद में लेकर विष से भरा स्तन पिलाने लगी। लेकिन भगवान की लीला निराली थी।बालकृष्ण ने उसका वध कर दिया और उसे मोक्ष प्रदान किया। कथा में आगे बताया गया कि इसके बाद माता यशोदा बालकृष्ण को पूतना की छाती से उठाकर घर ले आईं। उन्होंने गोमूत्र और गौशाला की रज से भगवान को शुद्ध किया। कथा व्यास ने बताया कि भारतीय संस्कृति में गाय और उससे जुड़े तत्वों को पवित्र माना गया है। उन्होंने बताया कि भगवान कृष्ण ने आगे चलकर अनावर्त और सकटासुर जैसे राक्षसों का भी उद्धार किया। भगवान ने अपनी लीलाओं से धर्म और भक्तों की रक्षा की। संगीतमय कथा प्रसंग सुनकर श्रोता भावविभोर हो गए। इस अवसर पर मुख्य यजमान श्रवण कुमार गुप्ता खोखा सेठ, शिवम गुप्ता, धर्म कुमार गुप्ता, ऊषा गुप्ता, प्रभा गुप्ता, कान्हा गुप्ता सहित बड़ी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे।

खेत में अधेड़ का शव मिलने से फैली सनसनी

जालौन- कोतवाली क्षेत्र में सोमवार की सुबह एक अधेड़ व्यक्ति का शव मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया। बंगरा मार्ग स्थित होटल रिच गैलेक्सी के पास एक खेत में शव पड़े होने की सूचना मिलते ही आसपास के लोगों की मौके पर भीड़ जमा हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम को भेज दी है और जांच शुरू कर दी। मृतक की पहचान जालौन कस्बे के मोहल्ला तोपखाना निवासी बृजलाल (57) पुत्र सरमन के रूप में हुई है। बताया गया कि सोमवार सुबह कुछ राहगीरों ने खेत के किनारे एक व्यक्ति को पड़ा देखा। पहले उन्हें लगा कि वह बेहोश है लेकिन पास जाकर देखने पर उसकी मौत हो चुकी थी। इसके बाद स्थानीय लोगों ने जालौन कोतवाली पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने आसपास मौजूद लोगों से पूछताछ कर मामले की जानकारी जुटाई और शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार, फिलहाल मौत के कारणों का पता नहीं चल सका है। प्रारंभिक जांच में शरीर पर किसी प्रकार के स्पष्ट चोट के निशान नहीं मिले हैं। मौत की असली वजह पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी। बताया जा रहा है कि मृतक बृजलाल के संबंध में पहले जालौन कोतवाली में गुमशुदगी की सूचना भी दर्ज कराई गई थी। पुलिस अब इस पहलू की भी जांच कर रही है कि वह खेत तक कैसे पहुंचा और किन परिस्थितियों में उसकी मौत हुई है।

फसलें बचाने को जाखलौन पंप कैनाल नहर चालू करने की मांग, डीएम को सौंपा ज्ञापन

ललितपुर। भारतीय किसान संघ के बैनर तले किसानों ने जिलाधिकारी को एक ज्ञापन सौंपकर जाखलौन पंप कैनाल नहर को पुनः: चालू कराने की मांग की है। किसानों का कहना है कि अंतिम सिंचाई न मिल पाने के कारण क्षेत्र की फसलें सूखने की कगार पर हैं, जिससे भारी आर्थिक नुकसान की आशंका है। जिलाधिकारी को सौंपे गए पत्र में किसानों ने अवगत कराया कि जाखलौन पंप कैनाल से जुडे अनेक ग्रामों जैसे जाखलौन, जाखलौन तालबेहट, बुढ़वार, दैलवारा आदि क्षेत्रों में किसानों की अंतिम सिंचाई का पानी अभी तक खेतों तक नहीं पहुंच पाया है। इसके कारण गेहूं और अन्य फसलों के दाने पतले रहने और पैदावार घटने का खतरा मंडरा रहा है। भारतीय किसान संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि फसल सूखने की स्थिति में किसानों को भारी नुकसान होगा। किसानों को डर है कि इस बार उनकी मेहनत की लागत भी नहीं निकल पाएगी। किसानों ने जिला प्रशासन से विनम्र निवेदन किया है कि किसानों के व्यापक हित को देखते हुए कुछ समय के लिए जाखलौन पंप कैनाल को फिर से चलाने के आदेश जारी किए जाएं।

10 माह से मानदेय न मिलने पर फूटा मनरेगा कर्मियों का गुस्सा, ब्लॉक कार्यालय के बाहर प्रदर्शन

●बीडीओ को सौंपा ज्ञापन, 15 मार्च से कलम बंद हड़ताल की दी चेतावनी; होली पर भी भुगतान न होने से बढ़ी नाराजगी ।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोसाईगंज, लखनऊ - राजधानी लखनऊ के विकासखण्ड गोसाईगंज में लगभग दस माह से अधिक समय बीत जाने के बावजूद मानदेय का भुगतान न होने से नाराज मनरेगा कर्मियों का आक्रोश सोमवार को खुलकर सामने आ गया। नाराज कर्मियों ने गोसाईगंज ब्लॉक कार्यालय परिसर के बाहर एकत्रित होकर विरोध प्रदर्शन किया और सरकार व प्रशासन के खिलाफ जमकर नाराजगी जताई। इसके बाद सभी कर्मियों ने बीडीओ राजेश बहादुर सिंह को मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन सौंपते हुए जल्द से जल्द लंबित मानदेय के भुगतान की मांग की। यह प्रदर्शन मनरेगा कार्मिक महासंघ उत्तर प्रदेश के आह्वान पर आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में मनरेगा से जुड़े संविदा कर्मचारी शामिल हुए। प्रदर्शन की अध्यक्षता अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी गौरव त्रिपाठी ने की, जबकि तकनीकी सहायक राजेश कुमार, रोजगार सेवक ब्लॉक अध्यक्ष मनीष पटेल, कंप्यूटर ऑपरेटर जितेन्द्र यादव सहित ब्लॉक के समस्त संविदा कर्मचारी ब्लॉक परिसर में एकत्रित हुए और अपनी समस्याओं को लेकर आवाज बुलंद की। मनरेगा कर्मियों ने बताया कि पिछले करीब दस महीनों से उनका मानदेय लंबित पड़ा है, जिसके कारण उन्हें आर्थिक तंगी और मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कर्मचारियों का कहना है कि होली जैसे बड़े त्योहार पर भी भुगतान न होने से उनके परिवारों के सामने भरण-पोषण का संकट खड़ा हो गया है और कई कर्मचारियों की स्थिति बेहद दयनीय हो चुकी है।

कर्मचारियों ने प्रशासन से जल्द से जल्द बकाया मानदेय का भुगतान कराने की मांग करते हुए चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर तत्काल ध्यान नहीं दिया गया तो वे 15 मार्च 2026 से कलम बंद हड़ताल पर जाने के लिए बाध्य होंगे। मनरेगा कर्मियों का कहना है कि लंबे समय से वे धैर्य के साथ काम करते हुए भुगतान का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन अब स्थिति असहनीय हो चुकी है। यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा, जिसकी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी।

उपशिक्षा निदेशक ने किया परीक्षा केंद्र का औचक निरीक्षण

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के बैसवारा इंटर कॉलेज में सोमवार को यूपी बोर्ड इंटरमीडिएट की परीक्षा शांतिपूर्ण संपन्न हुई। द्वितीय पाली में मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र विषय की परीक्षा कराई गई। परीक्षा के दौरान माध्यमिक शिक्षा विभाग की उपशिक्षा निदेशक रेखा दिवाकर ने औचक निरीक्षण किया। उन्होंने केंद्र की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और कक्ष निरीक्षकों से जानकारी भी ली। निरीक्षण के समय परीक्षा केंद्र पर सभी व्यवस्थाएं सुचारु रूप से संचालित मिली। परीक्षा कक्षों में परीक्षार्थी अनुशासन के साथ परीक्षा देते नजर आए। केंद्र पर सुरक्षा और पारदर्शिता के नियमों का भी पालन होता पाया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने परीक्षा संचालन को लेकर संतोष व्यक्त किया। प्रधानाचार्य डॉ. नरेंद्र बहादुर सिंह ने बताया कि उन्होंने परीक्षा के सफल संचालन के लिए प्रभारी सुनील त्रिपाठी, बाह्य केंद्र व्यवस्थापक सविता वर्मा व स्टैटिक डॉ. शशिकांत त्रिवेदी की सराहना की। परीक्षा केंद्र पर पूरे समय अनुशासन बना रहा। व्यवस्थाओं को लेकर प्रशासन और विद्यालय प्रबंधन सतर्क रहा। द्वितीय पाली की परीक्षा में भवानी प्रसाद श्रीवास्तव, इन्द्रेश बाजपेयी, राजेन्द्र सिंह राठौर, कनकलता सिंह, सपना सिंह और सरिता सहित अन्य शिक्षक मौजूद रहे।

भागवत् कथा में रासलीला व रोमांचक मोर नृत्य की प्रस्तुति पर श्रद्धालु हुए भावविभोर

●ब्लाक प्रमुख ओमप्रकाश शुक्ला बिन्धेश्वरी के पैतृक गांव में हो रहा आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। जनपद के मोहनलाल गंज क्षेत्र के ब्लाक प्रमुख ओमप्रकाश शुक्ला ने अपने पैतृक गाँव दयाल खेड़ा बाजपेयी खेड़ा में भागवत कथा का 7 दिवसीय कार्यक्रम वित्रत शनिवार से प्रारम्भ कराया गया । रामाचार्य मावेश कृष्ण भरद्वाज (ठाकुरजी) के मुखार बिन्दु से भागवत् कथा प्रारम्भ होकर शनिवार को विशाल भण्डारा के साथ ही समाप्त होगा । आयोजक ब्लाक प्रमुख मोहनलालगंज ओमप्रकाश शुक्ला बिन्धेश्वरी ने क्षेत्र एवं दूरदराज के भागवत कथा श्रद्धालुओं से परिवार सहित कथा श्रवण हेतु उपस्थित होने का अनुरोध किया है। भागवत कथा में जहाँ भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं व नारद मुनि के संवाद व भजनों से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया । वहीं पर वासुदेव व देवकी को कंस द्वारा कारागार में डालने व उसकी नृशंस्ता,आकाशवाणी सुनकर अपनी बहन देवकी के 8वें पुत्र के हाथों से भविष्य में मारे जाने से भयभीत होकर बासुदेव, देवकी व अपने पिता के सिंहासन पर काबिज होकर उन्हें भी कारागार में बन्दी बना दिया। श्रीधाम वृन्दावन से पधारे कलाकारों ने भक्तजनों के समक्ष मनमोहक मंचन कर अपनी ओर आकर्षित कर लिया। नित्य प्रतिदिन श्रद्धालु भक्तजनों का जमावड़ा बढ़ता ही जा रहा है। सोमवार को मिर्जापुर से भाजपा विधायक रत्नाकर मिश्रा भी पहुंचे

रेशम उत्पादन से होगी किसानों की आय में बढ़ोतरी

●रेशम उत्पादन पर पांच दिवसीय प्रौद्योगिक उन्मुखीकरण कार्यक्रम का शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कुमारगंज [अयोध्या]। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के हाईटेक हाल में 'रेशम उत्पादन एवं क्षमता निर्माण' विषय पर पांच दिवसीय प्रौद्योगिक उन्मुखीकरण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम कुलपति डा. बिजेंद्र सिंह के दिशा-निर्देशन में आयोजित किया जा रहा है। मुख्यअतिथि के तौर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विवि के कुलसचिव डा. पी.एस. प्रमाणिक ने कहा कि रेशम उत्पादन पर क्षमता निर्माण एक महत्वपूर्ण पहल है जो रेशम उद्योग को मजबूत बनाने और किसानों की आय बढ़ाने में मदद कर सकता है। किसानों की आय में वृद्धि हो सकती है क्योंकि वे अधिक उत्पादन कर उत्पादों को बेहतर ढंग से बेच सकते हैं।

कृषि अधिष्ठाता डा. प्रतिभा सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य सतत रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने, रेशम उत्पादन के ज्ञान, तकनीकी कौशल और व्यावहारिक समझ को बढ़ाना है। कहा कि किसानों और रेशम उत्पादकों को आधुनिक तकनीकों और प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण देने की जरूरत है। निदेशक प्रशासन डा. सुशांत श्रीवास्तव ने कहा कि रेशम उत्पादन के लिए किसानों को आधुनिक तकनीकियों को अपनाने की जरूरत है। इसके उत्पादन से ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की संभावनाएं दोगुणी हो सकती हैं। किसानों को अपनी आय को बढ़ाने एवं आत्मनिर्भर बनने के लिए रेशम उत्पादन का कार्य एक बेहतर विकल्प बन सकता है। कार्यक्रम के दौरान अधिष्ठाता डा. सी.पी. सिंह व निदेशक शोध डा. शभू प्रसाद ने भी अपने विचारों को रखा। कृषि विवि एवं केंद्रीय रेशम बोर्ड भारत सरकार के तत्वाधान में कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. उमेश चंद्रा के संयोजन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति के सचिव डा. जसवंत सिंह ने सभी अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर विवि के समस्त अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने की नगर निकायों के कार्यों की प्रगति की समीक्षा, अधिकारियों को दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर- जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित सिद्धार्थ मीटिंग हॉल में नगर निकायों के कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनपद की नगर पालिका परिषद एवं नगर पंचायतों में चल रहे विकास कार्यों, स्वच्छता व्यवस्था, पेयजल आपूर्ति तथा शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने सभी अधिशासी अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि नगर क्षेत्रों में स्वच्छता व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। नियमित रूप से कूड़ा उठान, नालियों की सफाई तथा सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई सुनिश्चित की जाए, ताकि नगरवासियों को स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण मिल सके। उन्होंने कहा कि कहीं भी कूड़े का ढेर दिखाई नहीं देना चाहिए और स्वच्छता अभियान को प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए।

जिलाधिकारी ने नगर निकायों में चल रहे निर्माण एवं विकास कार्यों की भी समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी विकास कार्यों को निर्धारित समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण कराया जाए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि निर्माण कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही या अनियमितता पाए जाने पर संबंधित अधिकारी एवं ठेकेदार के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

जिलाधिकारी ने नगर क्षेत्रों में स्ट्रीट लाइट व्यवस्था, पेयजल आपूर्ति, वाटर एटीम चालू कराने का एंव जिस वार्ड में एटीम वाटर नहीं लगे वहां लगवाने का निर्देश दिया,जल निकासी व्यवस्था तथा पार्कों के रख-रखाव की स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि खराब स्ट्रीट लाइटों को तत्काल ठीक कराया जाए तथा पेयजल आपूर्ति में किसी प्रकार की समस्या नहीं होनी चाहिए। जलभराव की समस्या वाले क्षेत्रों में विशेष ध्यान देते हुए समुचित जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।

बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि नगर निकायों के सभी अधिकारी अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी जिम्मेदारी एवं पारदर्शिता के साथ करें। शासन द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक समय से पहुंचाया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि नगर निकायों के कार्यों की समय-समय पर समीक्षा की जाती रहेगी, जिससे विकास कार्यों में तेजी लाई जा सके और आम जनता को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

रामपुरखास के चतुर्दिक विकास की मुहिम होगी तेज- मोना

लालगंज,प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने सोमवार को यहां नगर स्थित कैम्प कार्यालय पर जनसमस्याओं की सुनवाई की। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए विधायक मोना ने कहा कि रामपुरखास मे विकास तथा भाईचारे के वातावरण को सदैव मजबूत बनाया रखा जाएगा।कार्यकर्ताओं से कहा कि वह क्षेत्र मे जनसम्पर्क अभियान के तहत पार्टी की नीतियो के साथ साथ क्षेत्र में राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी के नेतृत्व में संचालित हो रही विकास योजनाओं को लेकर जनता के बीच जागरूक माहौल तैयार करें। उन्होने कहा कि प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा विकास की जगह उन्माद की राजनीति किया करती है।विधायक मोना ने कार्यकर्ताओं का हौंसला बढ़ाते हुए कहा कि उनके मान सम्मान पर कभी आंच नही आने पाएगी। कैम्प कार्यालय पर आये क्षेत्रीय लोगों की समस्याओं की भी सुनवाई की। इसके बाद विधायक आराधना मिश्रा मोना नगर पंचायत के जलेशरगंज रोड पर नंदलाल कौशल के संयोजन में हो रही श्रीमदभागवत कथा में कथा श्रवण को पहुंची।इसके बाद वह बाबा घुइसरनाथ धाम पहुंच कर दर्शन पूजन कर पर्यटन विकास से जुड़ी परियोजनाओं के संचालन का भी अवलोकन किया। क्षेत्रीय दौरे में विधायक मोना ने देउम पश्चिम, सांगीपुर, आहरबीहर, बैजलपुर, पूरे लोका, सेमरा, अमावां में भी पहुंचकर लोगों से मुलाकात करते हुए रामपुरखास के सर्वश्रेष्ठ विकास में सहयोग मांगा।

होली का पर्व समाज को एकता के सूत्र में बांधने का संदेश देता

●श्री हरिद्वारी वैश्य महासभा का होली मिलन समारोह आयोजित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। श्रीहरिद्वारी वैश्य महासभा की जिला कार्यकारिणी द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन शहर के एक निजी गेस्ट हाउस में किया गया। इस मौके पर मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, साथ ही बुजुर्गों को अंग वस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन और पुष्पार्चन के साथ हुआ। इसमें समाज के लोगों ने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं। इसके बाद मंचासीन अथितियों का फूल माला के साथ स्वागत किया गया। इस मौके पर महासभा के जिलाध्यक्ष मुन्ना लाल गुप्ता ने कहा कि इस होली मिलन कार्यक्रम का मतलब है कि आपस में सबसे मिलन करना। होली का यह पर्व हमें आपसी मतभेदों को भुलाकर समाज को एकता के सूत्र में बांधने का संदेश देता है। बीते कई वर्षों से आयोजित हो रहे होली मिलन समारोह से आपसी भाईचारा बढ़ता है। होली पर गले मिलकर एक-दूसरे से गिले शिकवे दूर किए जाते हैं। कार्यक्रम के दौरान समाज के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। इस मौके पर वृंदावन की तर्ज पर समाज के लोगों ने मिलकर फूलों की होली खेली। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार राजीव गुप्ता तेजू ने किया। इस मौके पर श्रीप्रकाश गुप्ता, कपिल मोहन गुप्ता, सभासद राकेश गुप्ता पिंकू, संजीव गुप्ता, भगवती गुप्ता, संतोष गुप्ता, मिथलेश गुप्ता, दधीचि गुप्ता, आलोक गुप्ता, श्याम नाथ गुप्ता, अनिल आनंद गुप्ता, दिनेश गुप्ता, आदित्य गुप्ता, नीलम गुप्ता, शकुंतला गुप्ता, गोपीनाथ गुप्ता, सुभाष गुप्ता आदि मौजूद रहे।

बिसवां बार एसोसिएशन में हर्षोल्लास के साथ होली मिलन समारोह का हुआ आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां। सोमवार को बिसवां बार एसोसिएशन में होली मिलन समारोह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम में अधिवक्ताओं और अधिकारियों ने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपजिलाधिकारी बिसवां शिखा शुक्ला उपस्थित रहीं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि होली केवल रंगों का त्योहार ही नहीं बल्कि आपसी प्रेम, भाईचारे और मेल-मिलाप का भी प्रतीक है। यह पर्व लोगों को आपसी मतभेद भुलाकर एक-दूसरे के करीब आने का संदेश देता है। उपजिलाधिकारी न्यायिक अवनीश कुमार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि होली का त्योहार समाज में प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा देता है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन लोगों के बीच आपसी संबंधों को मजबूत करते हैं। तहसीलदार उमाशंकर त्रिपाठी ने कहा कि होली भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण पर्व है जो लोगों को आपसी भाईचारे और सौहार्द का संदेश देता है। उन्होंने सभी को होली की शुभकामनाएं दीं।

पुलिस उपाधीक्षक अमन सिंह ने कहा कि त्योहार हमें एक-दूसरे के करीब लाने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने लोगों से शांति और सौहार्द के साथ होली मनाने की अपील की। कार्यक्रम में बार एसोसिएशन अध्यक्ष दिनेश कुमार श्रीवास्तव, सचिव मनोज गुप्ता एवं चैयरमैन ब्रजेश नारायण गुप्ता,आर एन सिंह, राज किशोर यादव,आशोक वर्मा, पुत्ती लाल वर्मा,कैलाश श्रीवास्तव, नीरज कुमार श्रीवास्तव, सन्तोष कठेरिया, इंतिख़ाब आलम सिद्दिकी, प्रमोद श्रीवास्तव,राजेश वर्मा, प्रमोद यादव, अनमोल मौर्या, विपिन यादव, शिशुपाल यादव, इन्द्रपॉल वर्मा,अरूण श्रीवास्तव,राम किषोर वर्मा, अश्वनी श्रीवास्तव, जितेन्द्र मिश्रा,अनुज यादव,प्रदीप विश्वकर्मा, प्रदीप कुमार गौतम,आनन्द मिश्रा, रवि मौर्या, परमेश यादव, दीपू गुप्ता,फूलचन्द्र,प्रीती श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ता एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे। समारोह में सभी ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर होली पर्व की खुशियां साझा कीं।

मनरेगा कर्मियों का फूटा गुस्साः 'होली बीती सूनी, अब आर-पार की जंग

●जुलाई 2025 से वेतन और ईपीएफ लंबित; बीडीओ को सौंपा सीएम संबोधित ज्ञापन, दी कार्य बहिष्कार की चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मोहनलालगंज, लखनऊ। राजधानी लखनऊ के विकासखंड मोहनलालगंज में सोमवार को उस समय माहौल गरमा गया जब कई महीनों से मानदेय का इंतजार कर रहे मनरेगा कर्मियों का धैर्य टूट गया। उत्तर प्रदेश ग्राम रोजगार सेवक संघ के बैनर तले जुटे कर्मियों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर प्रदर्शन किया और मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन खंड विकास अधिकारी आशुतोष श्रीवास्तव को सौंपा। ब्लॉक अध्यक्ष अंकुर शुक्ला के नेतृत्व में कर्मियों ने प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए बताया कि जुलाई 2025 से ग्राम रोजगार सेवकों, कंप्यूटर ऑपरेटरों और तकनीकी सहायकों का मानदेय नहीं मिला है। साथ ही कर्मचारियों का आरोप है कि उनके ईपीएफ (EPF) की राशि भी लंबे समय से लंबित है, जिससे कर्मचारियों और उनके परिवारों को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है।

कर्मचारियों ने कहा कि होली जैसे बड़े पर्व पर भी भुगतान न होने से सैकड़ों परिवारों को आर्थिक तंगी में त्योहार मनाना पड़ा। ब्लॉक अध्यक्ष अंकुर शुक्ला ने कहा कि प्रशासनिक मद में बजट उपलब्ध होने के बावजूद भुगतान न किया जाना अधिकारियों की घोर उदासीनता को दर्शाता है और यह कर्मचारियों के जीवनयापन के अधिकार का भी उल्लंघन है। कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र ही बकाया मानदेय का भुगतान नहीं किया गया तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। इसके तहत काली पट्टी बांधकर विरोध प्रदर्शन, कार्य बहिष्कार और 16 मार्च को मुख्यमंत्री के जनता दर्शन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पहुंचकर अपनी समस्या रखने की योजना बनाई गई है।

ज्ञापन कार्यक्रम के दौरान तकनीकी सहायक राजकिशोर शुक्ला, लालबहादुर पाण्डेय, सहायक लेखाकार प्रियंका श्रीवास्तव, विनीत कुमार मिश्रा, रेशमा कुमारी, गीता देवी, सविता देवी, अनिल कुमार, अजीत सिंह, रामकेश, मुनेश कुमार और अजय यादव सहित कई मनरेगा कर्मी मौजूद रहे।

बलिया में बच्चों के विवाद ने लिया खूनी रूप, मारपीट में 50 वर्षीय व्यक्ति की मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलिया- जिले के रेवती थाना क्षेत्र में बच्चों के बीच हुए मामूली विवाद ने रविवार रात हिंसक रूप ले लिया। दो पक्षों के बीच लाठी-डंडों से हुई मारपीट में एक 50 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद इलाके में तनाव का माहौल है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी। मिली जानकारी के अनुसार रेवती कस्बे में एक पक्ष के धन जी तुरहा और दूसरे पक्ष के सुनील तुरहा के बच्चों के बीच रविवार शाम किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई थी। देर रात करीब आठ बजे बीज गोदाम के पास दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। पहले कहासुनी हुई, जो देखते ही देखते लाठी-डंडों से मारपीट में बदल गई। इस दौरान धन जी तुरहा (50), भूलन तुरहा (35) और अमन (16) पुत्र धन जी तुरहा गंभीर रूप से घायल हो गए। वहीं दूसरे पक्ष से मीना देवी (50) पत्नी मुंसी तुरहा भी घायल हो गईं। सभी घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रेवती ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने धन जी तुरहा को मृत घोषित कर दिया।

घटना की सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष अनुपम जायसवाल पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। हालात को देखते हुए आधा दर्जन से अधिक थानों की पुलिस फोर्स तैनात की गई। अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी कृपा शंकर और क्षेत्राधिकारी मोहम्मद फहीम कुरैशी ने भी घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया है। मामले में करीब आधा दर्जन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी कृपा शंकर के अनुसार प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि विवाद सब्जी की दुकान लगाने को लेकर शुरू हुआ था, जिसमें मारपीट के दौरान धन जी तुरहा गंभीर रूप से घायल हो गए और उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। पुलिस पीड़ित परिवार के संपर्क में है और तहरीर मिलने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

स्वतंत्र प्रभात
जो लिखेगा, वही टिकेगा , वही दिखेगा
स्वतंत्र प्रभात के राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक अखबार, पत्रिका एवं ऑनलाइन चैनल में काम करने हेतु अनुभवी लोगों की आवश्यकता है।
जिला, तहसील एवं ब्लाक स्तर पर ब्यूरोचीफ, संवाददाता और विज्ञापन प्रतिनिधियों की आवश्यकता है। इच्छुक एवं अनुभवी व्यक्ति संपर्क करें।
अपना बायोडाटा भेजे : 9511151254
www.swatantraprabhat.com www.epaper.swatantraprabhat.com

अर्बन फ्लड नियंत्रण को लेकर मंडल स्तरीय बैठक

जलभराव वाले क्षेत्रों में पंपिंग स्टेशन स्थापित करने की योजना को मंजूरी

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। शहर में बरसात के दौरान होने वाली जलभराव की समस्या के स्थायी समाधान के लिए प्रशासन ने महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अर्बन फ्लड नियंत्रण एवं स्टॉर्म वाटर ड्रेनेज व्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से सोमवार को मंडलायुक्त की अध्यक्षता में मंडल स्तरीय प्रशासनिक समन्वय समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जलजमाव से प्रभावित क्षेत्रों में पंपिंग स्टेशन स्थापित करने सहित वर्षा जल की सुचारु निकासी के लिए तैयार की गई योजना को अनुमोदन प्रदान किया गया। आयुक्त कार्यालय स्थित गांधी सभागार में आयोजित इस बैठक की अध्यक्षता मंडलायुक्त सौम्या अग्रवाल ने की। बैठक में जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा, प्रयागराज विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ऋषिराज, नगर आयुक्त साई तेजा समेत विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने शहर में वर्षा ऋतु के दौरान निचले इलाकों में उत्पन्न होने वाली जलभराव की समस्या और उसके स्थायी समाधान के उपायों पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में नगर निगम द्वारा चिन्हित उन क्षेत्रों की समीक्षा की गई, जहां बरसात के

समय जलभराव की समस्या अधिक गंभीर हो जाती है। ऐसे स्थानों पर वर्षा जल की निकासी को प्रभावी बनाने के लिए नालों पर डैम और गेट लगाने के साथ-साथ पंपिंग स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई गई है। इन पंपिंग स्टेशनों की मदद से अतिरिक्त वर्षा जल को तेजी से बाहर निकाला जा सकेगा, जिससे निचले और संवेदनशील इलाकों में जलजमाव की स्थिति को नियंत्रित किया जा सकेगा और आम नागरिकों को राहत मिलेगी। अधिकारियों ने बताया कि यह विस्तृत परियोजना प्राक्कलन सी एंड डी एस, उत्तर प्रदेश जल निगम (नगरीय) द्वारा नगर निगम के समन्वय से तैयार किया गया है। इसमें निर्माण कार्य के साथ-साथ पांच वर्षों के संचालन और अनुरक्षण (ऑपरेशन एवं मेंटेनेंस) का खर्च भी शामिल किया गया है, ताकि व्यवस्था का सुचारु संचालन लंबे समय तक सुनिश्चित किया जा सके। बैठक में यह भी बताया गया कि शहर में तेजी से हो रहे शहरीकरण, बढ़ती आबादी और कई स्थानों पर प्राकृतिक जल निकासी मार्गों के अवरुद्ध होने के कारण वर्षा के दौरान जलभराव की समस्या गंभीर रूप ले रही है। पूर्व में खुले और निचले क्षेत्रों में अब बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य होने से पानी के प्राकृतिक प्रवाह में बाधा उत्पन्न हो रही है, जिससे जल निकासी की समस्या बढ़ती जा रही है। मंडलायुक्त सौम्या अग्रवाल ने निर्देश दिया कि योजना के क्रियान्वयन से पहले प्रस्तावित स्थलों का संयुक्त निरीक्षण संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया जाए। साथ ही स्थानीय वार्ड के नागरिकों को प्रस्तावित डिजाइन की जानकारी देते हुए उनका फीडबैक भी लिया जाए, ताकि भविष्य में किसी प्रकार की व्यावहारिक समस्या उत्पन्न न हो। उन्होंने सभी विभागों के बीच बेहतर समन्वय बनाए रखते हुए परियोजना को समयबद्ध तरीके से लागू करने के निर्देश भी दिए। बैठक में यह भी तय किया गया कि सभी कार्य नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) की गाइडलाइन के अनुरूप किए जाएंगे। पंपिंग सिस्टम से निकलने वाले जल के प्रवाह की सटीक निगरानी के लिए फ्लो-मीटर लगाए जाएंगे। इसके साथ ही पंप कंट्रोल पैनल में रिमोट मॉनिटरिंग और कम्युनिकेशन की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे केंद्रीय मॉनिटरिंग कक्ष को वास्तविक समय में जानकारी मिलती रहेगी और पूरी प्रणाली की प्रभावी निगरानी संभव हो सकेगी। प्रशासन का मानना है कि इस योजना के लागू होने के बाद शहर के निचले और जलभराव प्रभावित क्षेत्रों में बरसात के समय होने वाली समस्याओं में काफी हद तक कमी आएगी और नागरिकों को बड़ी राहत मिलेगी।

नारी शक्ति का उत्सव : समानता, सम्मान और सशक्तिकरण की ओर : ज्योति सिंह

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को विश्वभर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं के सम्मान, उनके अधिकारों, उपलब्धियों और समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करने का अवसर प्रदान करता है। महिला दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि यह समाज में समानता, न्याय और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जागरूकता बढ़ाने का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। नारी को सृष्टि की आधारशिला कहा गया है। एक महिला ही माँ, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में परिवार और समाज को स्नेह, संस्कार और मजबूती प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति में सदियों से नारी को शक्ति, ज्ञान और समर्पण का प्रतीक माना गया है। देवी दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में नारी शक्ति की पूजा की जाती है। यह दर्शाता है कि समाज में महिलाओं को सदैव विशेष सम्मान प्राप्त रहा है। इतिहास के पन्नों को पलटें तो हमें अनेक ऐसी महान

महिलाओं के उदाहरण मिलते हैं । झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने वीरता का परिचय दिया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी और इंदिरा गांधी जैसी महिलाओं ने राजनीति और समाज सेवा के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी। विज्ञान, शिक्षा, खेल, साहित्य और कला जैसे अनेक क्षेत्रों में भी महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।आज शिक्षा, प्रशासन, सेना, विज्ञान, चिकित्सा, खेल और व्यापार जैसे क्षेत्रों में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे केवल अपने परिवार ही नहीं बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे रही हैं। हालाँकि, समाज में महिलाओं की स्थिति पहले की तुलना में बेहतर हुई है, फिर भी कई चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं।। घरेलू हिंसा, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक कुरीतियाँ आज भी महिलाओं की प्रगति में बाधा बनती हैं। ऐसे में हमें समाज में जागरूकता फैलाने और महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सजग बनाने की आवश्यकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल एक दिन महिला दिवस मनाकर अपने कर्तव्यों की पूर्ति न समझें, बल्कि पूरे वर्ष महिलाओं के सम्मान, अधिकार और सुरक्षा के लिए कार्य करें। हमें अपने घर, विद्यालय और समाज में बेटियों को प्रोत्साहित करना चाहिए, उन्हें निर्णय लेने की स्वतंत्रता देनी चाहिए और उनके सपनों को साकार करने में सहयोग देना चाहिए। अंततः यही कहा जा सकता है कि जब तक समाज में महिलाओं को समान अधिकार, सम्मान और अवसर नहीं मिलेंगे, तब तक सच्चे अर्थों में विकास संभव नहीं है। एक सशक्त महिला ही सशक्त परिवार, सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण करती है।

असम के उत्तर करीमगंज में कांग्रेस उम्मीदवार की घोषणा पर बीजेपी टिकट प्रत्याशी मुन्नी छेत्री की प्रतिक्रिया

उम्मीदवार जकरिया अहमद पन्ना उत्तर करिमगंज में कोई बड़ा फैक्टर नहीं हैं। क्षेत्र की जनता विकास को प्राथमिकता देते हुए लोक विकास के मार्ग पर ही अपना वोट देगी: मुन्नी छेत्री।

स्वतंत्र प्रभात

असम। चुनाव के माहौल में पूरे असम राज्य में राजनीतिक उत्साह लगातार बढ़ रहा है। बराक घाटी के 13 सीटों को लेकर अब चाय की दुकान से लेकर सोशल मीडिया तक हर जगह जोरदार राजनीतिक चर्चा चल रही है। इसी बीच असम के उत्तर करीमगंज क्षेत्र में कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार के रूप में ज़कारिया अहमद (पान्ना) का नाम घोषित किया है, जिससे राजनीतिक गलियारों में नई चर्चा शुरू हो गई है। हालांकि अब तक

शासक दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपनी उम्मीदवार सूची घोषित नहीं की है। लेकिन इसी परिस्थिति में बीजेपी की टिकट प्रत्याशी महिला नेता मुन्नी छेत्री ने उत्तर करीमगंज की राजनीतिक स्थिति पर पहली प्रतिक्रिया व्यक्त की है। मुन्नी छेत्री कहती हैं कि बीजेपी सरकार के विकास के मार्ग के सामने कांग्रेस के उम्मीदवार ज़कारिया अहमद कोई पहलू नहीं हैं। उनका दावा है कि अब के मतदाता पहले से कहीं अधिक जागरूक हैं और वे अब कांग्रेस की कथित 'मुस्लिम मित्रता' या धर्म आधारित राजनीति से प्रभावित नहीं होंगे। उन्होंने आगे कहा, पहले विलुप्त हो चुके बदरपुर क्षेत्र में वर्षों से लोग कांग्रेस प्रतिनिधियों से जुड़े रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव के समय धर्म का सहारा लेकर अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय वादे और आश्वासन के नाम पर वोट प्राप्त किया गया, लेकिन चुनाव के बाद जनता की समस्याओं को हल करने के लिए कोई विशेष पहल नहीं की गई। मुन्नी क्षेत्री का दावा है कि अल्पसंख्यक मुस्लिम मतदाताओं में सत्ताधारी दल के खिलाफ डर पैदा करने का प्रयास किया गया। हालांकि, उनके अनुसार, जनता अब इन सभी चालों को समझ चुकी है और इस बार आसानी से जनता ठगी नहीं खाएगी। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस उम्मीदवार की घोषणा के बाद से उत्तर करीमगंज की राजनीतिक स्थिति काफी गर्म हो गई है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों के अनुसार, आगामी चुनाव में यह सीट एक प्रमुख चर्चित संघर्ष का क्षेत्र बन सकती है।

थाना सुरियावां अन्तर्गत मोबाइल छिनैती करने वाला 02 अभियुक्त गिरफ्तार

कब्जे से छिनैती का 01अदद मोबाइल बरामद

स्वतंत्र प्रभात

भदोही। वादी आयुष मिश्रा पुत्र बृजेश कुमार मिश्रा निवासी ग्राम कांवल बारीपुर थाना ज्ञानपुर जनपद भदोही द्वारा सूचना दी गई रात्रि करीब 7.30 बजे मै तथा मेरे दो दोस्त प्रिन्स मिश्रा व अंशुमान मिश्रा जो मेरे ही गाव के रहने वाले है हम तीनो लोग मोटर साइकिल से पूरे गड़ेरिया बाजार की तरफ जा रहे थे द्म.ह्य.ह.द्ध. पब्लिक स्कूल के पास पीछे से एक मोटरसाईकिल पर सवार तीन लड़के जो पूरे गड़ेरिया के रहने वाले है जिनको हम लोग पहचानते है ने हम लोगो की मोटरसाईकिल रुकवा कर मेरा मोबाइल रेडमी नाट टेन टी फाईव जी रंग ब्लू मोटर साईकिल से छीनकर भाग गए। जिसके संबंध में थाना सुरियावां पर प्राप्त तहरीर के आधार पर मु0अ0सं0 69/2026 धारा 304 बीएनएस में अभियोग पंजीकृत कर विवेचनात्मक कार्यवाही प्रचलित की गई अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा जनपद में चुस्त दुरुस्त कानून व्यवस्था के दृष्टिगत चोरी/छिनैती की घटनाओं के शीघ्र अनावरण व पंजीकृत

अभियोग से सम्बंधित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु निर्देश के क्रम में शुभम अग्रवाल, अपर पुलिस अधीक्षक भदोही के पर्यवेक्षण में मुखबिरी सूचना पर उप निरीक्षक अजय कुमार ओझा द्वारा वांछित अभियुक्त 1. संगम सरोज पुत्र इन्द्राज सरोज निवासी गडेरियापुर थाना सुरियावां जनपद भदोही उम्र करीब 28 वर्ष 2.सूरज उर्फ सचीन सरोज पुत्र बालाद्दीन निवासी गडेरियापुर थाना सुरियावा जनपद भदोही उम्र करीब 22 वर्ष को गड़ेरियापुर नवनिर्मीत पानी टंकी के पास से गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त हुई। जिसके कब्जे से 01 अदद छिनैती का मोबाइल बरामद किया गया है। उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के संबंध में पंजीकृत अभियोग में धारा-317(2) बी.एन.एस की बढ़ोत्तरी करते हुए विधिक कार्यवाही की गई।

ए.एन.एम. संयुक्त रूप से स्थानीय विधायको को सौपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

शहडोल। जिले की ए.एन.एम. एसोषिएषन कर्मचारी संघ ने अपने ज्ञापन में निवेदन किया कि सन् 1950 का सबसे पुराना कैडर है, जिसे स्वास्थ्य विभाग की रीड की हड्डी कहा जाता है, ए.एन.एम. संवर्ग द्वारा ही ग्रामीण मैदानी पहुच विहीन जनजातीय दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में टीकाकरण किया जाता है, पोलिया टिटनेस खसरा उन्मूलन का कार्य ए.एन.एम. द्वारा ही किया जाता है, शासन द्वारा संचालित योजनाए वैवंधना योजना में आयुष्मान कार्ड बनाना प्रधानमंत्री मातृत्व योजना मुख्यमंत्री प्रसूत योजना ए.एन.एम. के उपर है, शासन की गाईड लाइन अनुसार ए.एन.एम. कार्य करती है, इसी को लेकर जयसिंहनगर की विधायिका श्रीमती मनीषा सिंह एवं जैतपुर विधानसभा के विधायक को ए.एन.एम. एसोषियषन कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों ने ज्ञापन सौपकर शीघ्र न्याय दिलाने की मांग की है, जिसमें अंजली सोनवानी, सावित्री सिंह, रेखा ज्ञानचंदानी, सावित्री सिंह उइके, कुसुम वर्मा, सुनीता तिवारी, प्रभा सिंह, ललित सिंह मार्को, राजकुमारी टांडिया, जयंती संत प्रतीक्षा दुबे चित्रलेखा सोनी, गिरजा सोनी, अम्बेष्वरी सिंह, शषिकला पटेल, संध्या त्रिपाठी, देवकी राठौर उर्मिला प्रजापति ज्ञान प्रभा सिंह ने ज्ञापन सौपा।

'प्रोजेक्ट गंगा' से बढ़ेंगे रोजगार के अवसर, गांव-गांव पहुंचेगा हाई-स्पीड इंटरनेट

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार डिजिटल कनेक्टिविटी के साथ रोजगार सृजन को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल कर रही है। इसी क्रम में 'प्रोजेक्ट गंगा' के तहत प्रदेश में हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के विस्तार के लिए स्टेट ट्रांसफॉर्मेशन कमीशन और हिंदुजा ग्रुप की सहायक कंपनी वनओटीटी एंटरटेनमेंट लिमिटेड के बीच एमओयू साइन किया गया। इस परियोजना के तहत अगले 2-3 वर्षों में 20 लाख से अधिक घरों तक हाई-स्पीड इंटरनेट पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है, जबकि न्याय पंचायत स्तर पर 8,000 से 10,000 स्थानीय युवाओं को डिजिटल सेवा प्रदाता के रूप में विकसित किया जाएगा। इनमें महिलाओं की लगभग 50 प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित करने की योजना है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सेवाओं का विस्तार होने के साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर भी सृजित होंगे। इसके साथ ही परियोजना के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से एक लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित

करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कार्यक्रम में वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कहा कि आज का यह एमओयू उत्तर प्रदेश में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के साथ बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। कभी तकनीक के क्षेत्र में पीछे रहने के कारण भारत को विकासशील देश के रूप में देखा जाता था, लेकिन पिछले एक दशक में देश और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में हुए परिवर्तन ने दुनिया की धारणा बदल दी है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता अधिक से अधिक रोजगार के अवसर सृजित करने की है और यदि रोजगार तकनीक के माध्यम से मिलता है तो वह और अधिक प्रभावी और स्थायी होता है। प्रोजेक्ट गंगा (गवर्नमेंट असिस्टेड नेटवर्क फॉर ग्रोथ एंड एडवांसमेंट) के तहत लगभग 20 लाख घरों तक हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड पहुंचाने का लक्ष्य है, जिससे करीब एक करोड़ लोगों को लाभ मिलेगा। इसके साथ ही 8 से 10 हजार युवाओं को डिजिटल सर्विस प्रोवाइडर के रूप में प्रशिक्षित कर रोजगार से जोड़ा जाएगा, जबकि महिलाओं की भागीदारी को भी विशेष प्राथमिकता दी जाएगी। वित्त मंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में हाई-स्पीड इंटरनेट पहुंचने से डिजिटल सेवाओं, ऑनलाइन व्यवसाय, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के नए अवसर खुलेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सरकार लगातार प्रयास कर रही है कि ब्रॉडबैंड सुविधा गांव-गांव तक पहुंचे और युवाओं को तकनीक आधारित रोजगार मिल सके। युवाओं को डिजिटल उद्यमिता से जोड़ने के लिए सरकार आर्थिक सहयोग भी दे रही है। जनवरी 2024 में शुरू की गई योजना के तहत युवाओं को ?5 लाख तक का ऋण बिना ब्याज और बिना गारंटी उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसका लाभ अब तक एक लाख से अधिक लोग ले चुके हैं। उन्होंने आग्रह किया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी भाषा को भी प्रमुख स्थान दिया जाए, ताकि प्रदेश के अधिक से अधिक लोग इससे जुड़ सकें। वित्त मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले दो से तीन वर्षों में प्रोजेक्ट गंगा उत्तर प्रदेश में डिजिटल सशक्तिकरण और रोजगार सृजन का बड़ा आधार बनेगा। स्टेट ट्रांसफॉर्मेशन कमीशन के सीईओ मनोज कुमार सिंह ने कहा कि आज के दौर में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और डिजिटल हाईवे का महत्व कई मामलों में भौतिक एक्सप्रेसवे से भी अधिक हो गया है, क्योंकि यही विकास की नई दिशा तय कर रहा है। यह एमओयू डिजिटल डिवाइड और संभावित एआई डिवाइड को कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जिसके माध्यम से गांवों तक ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, ओटीटी सेवाएं और हाई-स्पीड इंटरनेट पहुंचेगा।

समय सीमा के अंदर समस्याओं का निस्तारण करे प्रशासन: मुख्यमंत्री

सीएम ने दी बच्चों को सीख- किताबें पढ़ो, सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग न करो

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को 'जनता दर्शन' किया। इस दौरान प्रदेश भर से आए पीड़ितों के पास मुख्यमंत्री स्वयं चलकर पहुंचे। उनका प्रार्थना पत्र लिया और आश्वस्त किया कि सरकार सभी की उचित समस्याओं के निस्तारण के लिए प्रतिबद्ध है। निश्चिंत होकर घर जाइए, आपकी समस्याओं का निस्तारण होगा। मुख्यमंत्री ने जनपदों के प्रशासनिक व पुलिस अफसरों को निर्देश दिया कि हर समस्या का निस्तारण समय सीमा के अंदर सुनिश्चित किया जाए।

निवेश और उद्योग विकास में देरी या लापरवाही स्वीकार नहीं

'जनता दर्शन' में मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान दो उद्यमियों ने अपनी समस्याएं रखीं। मुख्यमंत्री ने प्रार्थना पत्र को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभागों, विशेषकर उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) व जिला प्रशासन को समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि प्रदेश में निवेश का बेहतरीन इकोसिस्टम तैयार किया गया है। सरकार ने सिंगल विंडो सिस्टम सहित कई पारदर्शी व्यवस्थाएं लागू की हैं। उद्यमियों की परेशानी को प्राथमिकता के आधार पर दूर किया जाए। उन्होंने दो टूक कहा कि निवेश और उद्योग विकास में किसी भी प्रकार की देरी या लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।

अवैध कब्जे के मामले पर सीएम हुए सख्त

कासगंज से आए पीड़ित ने सीएम के समक्ष पुलिस से जुड़ी शिकायत रखी। पीड़ित ने अपने प्रकरण में कार्रवाई पर देरी की शिकायत की। इस पर सीएम योगी ने पुलिस अधीक्षक को मामले का संज्ञान लेते हुए समस्या के समयबद्ध निराकरण का निर्देश दिया। वहीं एक प्रकरण पारिवारिक विवाद से भी जुड़ा आया। अवैध कब्जे से जुड़ी शिकायत पर सीएम सख्त हुए, उन्होंने कहा कि ऐसे मामले बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे। उन्होंने पीड़ित को आश्वस्त किया कि नियमानुसार तत्काल कार्रवाई होगी।

किताबें पढ़ो, सोशल मीडिया का न्यूनतम प्रयोग करो

'जनता दर्शन' में अभिभावकों के साथ कुछ बच्चे भी आए थे। मुयमंत्री ने बच्चों को चॉकलेट दी और उनसे पढ़ाई के बारे में जानकारी ली। एक बच्चे के पास पहुंचे मुयमंत्री ने कहा कि किताबें पढ़ो। सोशल मीडिया का प्रयोग उतना ही करो, जितनी आवश्यकता है। इसका अत्यधिक प्रयोग घातक है। सीएम ने मोबाइल आदि का प्रयोग भी कम करने की सलाह दी।